RNI No. : UPHIN/2023/84344
वर्ष : 1 अंक : 8 ■ अगस्त 2023 ■ ₹ 30

प्रेरणा विचार

(पृष्ठ-36) गौतमबुद्ध नगर से प्रकाशित

अखण्ड भारत
सांस्कृतिक परिदृश्य

समान नागरिक संहिता समय की आवश्यकता

प्रेरणा विमर्श 2023

'स्व'- भारत का आत्मबोध

(1,2 एवं 3 दिसम्बर, 2023)

उद्घाटन

1 दिसम्बर
(शुक्रवार)
अपराह्न 3.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

उद्घाटन
एवं
प्रदर्शनी का अनावरण

विमर्श

2 एवं 3 दिसम्बर
(शनिवार/रविवार)
प्रातः 10.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

पत्रकार विमर्श/लेखक विमर्श
मीडिया शिक्षक/छात्र विमर्श
डिजिटल माध्यम विमर्श
प्रेरणा चित्रभारती लघु फिल्मोत्सव

समापन

3 दिसम्बर
(रविवार)
अपराह्न 3.30 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

समापन समारोह

आयोजक

प्रचार विभाग, मेरठ प्रांत/प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा
एवं
जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

कार्यक्रम स्थल
सभागार
गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

प्रेरणा विमर्श कार्यालय
प्रेरणा भवन, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
ई-मेल : prernavimarsh2023@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

संपर्क सूत्रः 9412245301, 9891120430 9650600195, 9811077950, 9354133754, 0120 4565851

Prerna Media | Prernasmedia | 9891360088 | @PrernaMedia

प्रेरणा विचार

वर्ष-1, अंक - 8

RNI No. : UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

अध्यक्ष अणंज कुमार त्यागी की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, सी-56/20
सेक्टर-62, नोएडा
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल :
prernavichar@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।
-संपादक

इस अंक में

हमारा प्यारा अखण्ड भारत 05

अखण्ड भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य 07

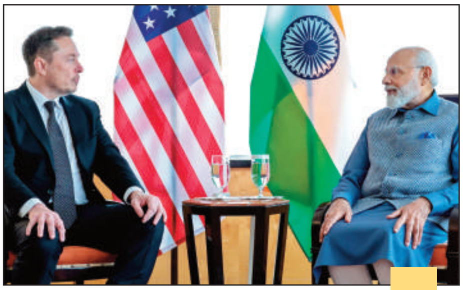

प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा और एलन मस्क 12

- देश की अखण्डता का प्रतीक है समान नागरिक संहिता 10
- सिनेमाई कला में हो मानवीय स्पर्श 14
- श्रावण मास में स्वास्थ्य के प्रति रहें सजग 16
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की नजर में नोएडा 17
- सामाजिक समरसता का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन 18
- विज्ञान और अध्यात्म - पूरक या विपरीत? 21
- सबल भारत का परिचय 'आत्मनिर्भरता' 22
- साइबर क्राइम से सावधान! 24
- चैट जीपीटी : नवीनतम टेक्नोलॉजी पर आधारित उपयोगिता 27
- अंतर्राष्ट्रीय / विशेष समाचार 28
- हरियाली तीज 30
- क्या आप जानते हैं? 32
- हर दिन पावन 33
- पत्रकारिता जगत में हलचल 34

स्वाधीनता से स्व के जागरण की ओर भारत

पंद्रह अगस्त को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त हो भारत के स्व की यात्रा के 76 वर्ष पूरे होने को हैं। स्वतंत्रता दिवस, भारत के उन अनगिनत वीर-वीरांगनाओं के संघर्ष, त्याग एवं सर्वोच्च बलिदान की कहानी याद दिलाता है जिनके खून-पसीने की कुर्बानी से भारत अंग्रेजों से आजादी छीन स्वयं को विश्व मानचित्र पर विशालतम लोकतंत्र के रूप में स्थापित कर सका है। आज स्वतंत्रता दिवस का महत्व इसलिए भी और बढ़ जाता है चूंकि गुलाम भारत को स्वतंत्र कराने एवं इसकी साक्षी रही अंतिम पीढ़ी भी अब समाप्त होने को है। स्वतंत्र भारत ने निर्विवाद रूप से ज्ञान, विज्ञान, अंतरिक्ष, चिकित्सा, रक्षा, खाद्यान, संचार एवं परिवहन जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। पश्चिम द्वारा सांप-सपेरों के देश के रूप में घृणित दृष्टि से देखे जाने वाले भारत ने 104 उपग्रहों को एक साथ प्रक्षेपित कर, चंद्रयान-3 अभियान आरंभ कर, नाभिकीय शक्ति सम्पन्न बन, क्रायोजेनिक इंजन/डीएनए फिंगर प्रिंटिंग/सुपरकम्प्यूटर विकसित कर, कम्प्यूटरीकरण/मौसम पूर्वानुमान/डिजिटलीकरण/ ई-वाणिज्य आदि क्षेत्रों में महारथ सिद्ध कर यशस्वी भारत के रूप में वैश्विक पहचान बनाई है। भारत ने दुनिया का न केवल सबसे बड़ा लिखित संविधान निर्मित किया, अपितु उसे लागू कर स्वयं को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में स्थापित भी किया है।

स्वतंत्र भारत ने निर्विवाद रूप से ज्ञान, विज्ञान, अंतरिक्ष, चिकित्सा, रक्षा, खाद्यान, संचार एवं परिवहन जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। पश्चिम द्वारा सांप-सपेरों के देश के रूप में घृणित दृष्टि से देखे जाने वाले भारत ने 104 उपग्रहों को एक साथ प्रक्षेपित कर , चंद्रयान-3 अभियान आरंभ कर, नाभिकीय शक्ति सम्पन्न बन, क्रायोजेनिक इंजन/डीएनए फिंगर प्रिंटिंग/सुपरकम्प्यूटर विकसित कर, कम्प्यूटरीकरण/मौसम पूर्वानुमान/डिजिटलीकरण/ ई-वाणिज्य आदि क्षेत्रों में महारथ सिद्ध कर यशस्वी भारत के रूप में वैश्विक पहचान बनाई है।

परंतु विदेशी आक्रान्ताओं के साथ हुए हजारों वर्षों के संघर्ष में भारत का स्व विस्मृत सा हो गया था। यूं तो भारत में स्व का भाव भारत राष्ट्र की कल्पना के समय से जागृत है, परंतु देश के स्वतंत्र होने के साथ ही देश के स्व को भुलाने के सोचे-समझे प्रयास भी होने लगे। परिणामस्वरूप भारत के स्व के आधार पर रक्षानीति, अर्थनीति, शिक्षानीति, विदेशनीति तैयार नहीं हो सकीं। यहाँ तक कि देश को स्वतंत्र कराने का श्रेय समस्त स्वातंत्र योद्धाओं को न देकर, केवल गिने-चुने लोगों को ही दिया जाने लगा। अतः आज फिर यह स्थापित करने की आवश्यकता है कि 15 अगस्त भारत के स्वत्व के पुनर्जागरण के आरंभ का दिवस है। ऐसे जागरण के संकेत मिल भी रहे हैं। पिछले दशक में विभिन्न नीतियों एवं कार्यक्रमों को भारतीय सोच के साथ एकीकृत किया गया है। इससे पहले कि वो नई पीढ़ी के मानस पटल पर अंकित हों, समाज गुलामी के प्रतीकों को मिटाने के लिए संकल्पित लग रहा है। भारतीय संसद के नए भवन के निर्माण ने इस इच्छा शक्ति को व्यक्त भी किया है। विश्व स्तर पर योग एवं आयुर्वेद की स्वीकार्यता बढ़ना, जी-20 एवं शंघाई सहयोग संगठन की अध्यक्षता तथा क्वाड की सदस्यता को देश के स्व को दुनिया द्वारा स्वीकृति के रूप में देखा जा सकता है। यह पहला स्वतंत्रता दिवस होगा जब भारत को 200 वर्ष गुलामी में जकड़ कर रखने वाले ब्रिटेन को पछाड़कर वही भारत आज पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। भारत में तेजी से हवाई, रेल, समुद्री एवं सड़क परिवहन में सुधार हो रहा है। भारत आज सर्वाधिक तेजी से बढ़ने वाला स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र भी है। सच्चे अर्थों में समग्र (सामाजिक/सांस्कृतिक/राजनैतिक/आर्थिक) आजादी सुनिश्चित करने के लिए मुख्य रूप से गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अन्धविश्वास, आतंकवाद, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पक्षपात, वंशवाद, सामाजिक भेदभाव तथा इनके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों/संस्थाओं/विचारों आदि से आजादी पाना अनिवार्य है। अतः समग्र आजादी के आंदोलन की सफलता के लिए संस्कारयुक्त व्यक्तियों का निर्माण तथा उन्नत विज्ञान-प्रौद्योगिकी विकसित किया जाना आवश्यक है। नवीनतम प्रौद्योगिकी तक पैठ बनाने के लिए आयातित प्रौद्योगिकी पर निर्भर न रहकर भारत को स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए दृढ़-संकल्पित होने की आवश्यकता है। 25-मई 1961 को अमेरिकन राष्ट्रपति जॉन एफ0 केनेडी ने चाँद पर पहला आदमी भेजने के संकल्प की घोषणा करते हुए कहा था, ‘आदमी को चन्द्रमा पर उतारने वाला अमेरिका पहला देश होगा। सच्चे अर्थों में यह केवल एक आदमी का चाँद पर जाना न होकर पूरे देश का चाँद पर जाने जैसा होगा। अतः अनिवार्य रूप से हम सबको उसे वहां पहुंचाने के लिए कार्य करना चाहिए’। आज हर भारतीय को 21-वीं शताब्दी को भारत की शताब्दी बनाने के आंदोलन अर्थात स्व के आंदोलन को अंजाम तक पहुंचाने के लिए ऐसे ही संकल्प की आवश्यकता है।

नरेन्द्र भदौरिया
राष्ट्रवादी विचारक एवं लेखक

हमारा प्यारा अखण्ड भारत

जिसे हम अखण्ड भारत कहते हैं उसका क्षेत्रफल 1857 में 83 लाख 52 हजार वर्ग किमी था। वर्तमान भारत का क्षेत्रफल (2023 में) 32 लाख 87 हजार 263 वर्ग किमी रह गया है।

अंग्रेजों ने भारत को दासता में जकड़ने के साथ अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने के लिए भारत के टुकड़े किये। 1947 में भारत का जो विभाजन अंग्रेजों ने किया, वह 1857 के बाद से इस देश का 7 वाँ विभाजन था।

महाभारत काल में भारत वर्ष के अन्तर्गत 01 करोड़ 72 लाख वर्ग किमी क्षेत्र आता था। तब इसे आर्यावर्त और भारत दो नामों से जाना जाता था। कुरुवंश के दो धड़ों के बीच युद्ध को महाभारत क्यों कहा गया। इसका उत्तर यह है कि उस समय हस्तिनापुर के चक्रवर्ती साम्राज्य के प्रभुत्व में 53 राजा और 13 बाह्य सम्बन्धी राजाओं ने अपनी सेनाओं के साथ भाग लिया था। कुल 45 लाख युद्धवीर इसमें सम्मिलित हुए थे। जिनमें से श्रीकृष्ण के साथी पाण्डु पुत्रों सहित 12 लोग बचे थे। इनमें कर्ण का एक पुत्र वृषकेतु भी था। जिसे युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ का राजा बना दिया था। धृतराष्ट्र का एक पुत्र युयुत्सु भी बचा था जो गान्धारी के 99 पुत्रों का सगा भाई नहीं था। वह गान्धारी की दासी के गर्भ से जन्मा धृतराष्ट्र पुत्र था।

> **सनातन संस्कृति के प्रति आदर का भाव इस सांस्कृतिक साम्राज्य की प्राण शक्ति थी। सर्वोच्च सत्ता अधिष्ठान की आवश्यकता पड़ी तो चक्रवर्ती सम्राट की व्यवस्था बनी। इसके अधीन जो राज्य होते वह भी प्रायः स्वतन्त्र सत्ता संचालन करते थे।**

अतीत के अनेक ग्रन्थों यथा पुराणों उपनिषदों के आधार पर माना जाता है कि भारत खण्ड को श्रीराम के कालखण्ड में ब्रह्मावर्त संज्ञा प्राप्त थी। श्रीराम का कालखण्ड श्रीकृष्ण के काल से कितना पूर्व का था इसका अनुमान ही किया जाता है। सनातन संस्कृति के ग्रन्थों के आधार पर कुछ लोग 20000 तो कुछ उससे भी पहले श्रीराम के अवतार लेने की बात मानते हैं। श्रीराम के काल में भारत का नाम ब्रह्मावर्त मिलता है। इसी नाम का उल्लेख मनुस्मृति और वैदिक साहित्य में अनेक प्रसंगों में उल्लिखित है। तब इस पावन भूखण्ड का क्षेत्रफल 01 करोड़ 72 लाख वर्ग किमी था, ऐसा मानना अनेक राष्ट्रीय और विदेशी विद्वानों का है।

सनातन संस्कृति के प्रति आदर का भाव इस सांस्कृतिक साम्राज्य की प्राण शक्ति थी। सर्वोच्च सत्ता अधिष्ठान की आवश्यकता पड़ी तो चक्रवर्ती सम्राट की व्यवस्था बनी। इसके अधीन जो राज्य होते वह भी प्रायः स्वतन्त्र सत्ता संचालन करते थे। चक्रवर्ती सम्राट उन्हें धर्म के अनुरूप कार्य व्यवहार के लिए ही विवश कर सकता था। अधर्म पर रोक के निमित्त यह व्यवस्था बनी थी।

इसीलिए श्रीराम ने अधर्मी राजा रावण के विरुद्ध युद्ध किया था। वैसे तो अंग्रेजों ने सबसे पहले 24 अगस्त 1608 में भारत की धरती पर अपने अपवित्र पाँव रखे थे। 1615 तक वह टोह लेने के बहाने व्यापार का नाटक करते रहे। 1615 में जहाँगीर ने अंग्रेज दूत टामस रो को अपने दरबार में रख लिया। यहीं

से कुचक्र चल पड़ा। फिर अंग्रेजों ने मुगलों का नाश करने में भारतीय समाज का हाथ थामे रखा।

अंग्रेज 1857 में क्रान्ति वीरों द्वारा खदेड़ दिये गये। पर 1858 में भारत के 22 राजाओं ने इंग्लैंड जाकर रानी की सरकार को फिर भारत आने का न्योता दिया। इस बार अंग्रेज ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पर्दे के पीछे नहीं, सीधे सत्ता हथियाने आये । आते ही उन राजाओं को मारना, उनके राज्य को नष्ट करना शुरू किया जिन्होंने उनको 1857 में खदेड़ने में सक्रिय भूमिका निभायी थी।

अंग्रेजों ने भारत पर सत्ता के पंजे गड़ाने के अभियान के अंतर्गत भारत के मानचित्र को छोटा करना शुरू किया। उन राज्यों को अखण्ड भारत से विलग करके स्वतन्त्र देश बनाना प्रारम्भ किया जिनको साथ रखना कठिन और अनुपयोगी लगा।

सबसे पहले 1876 में अंग्रेजों ने अफगानिस्तान (उपगणस्थान) को भारत से अलग कर दिया। भूटान को 1906 में अलग किया। 1912 में तिब्बत को अलग किया। श्रीलंका को भारत से विलग करने की बारी 1835 में आयी। किन्तु श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता 1948 में दी गयी। ब्रह्मदेश (बर्मा) जिसको अब म्यांमार कहते हैं उसे अंग्रेजों ने 1937 में अलग किया था। नेपाल के साथ अंग्रेज भिड़े पर कुछ क्षेत्रों को ही हथिया सके। यह वो क्षेत्र थे जिन्हें नेपाल ने भारतीय भूभाग से ले लिया था। दो वर्ष 1814 से 1816 के युद्ध के बाद सन्धि से ऐसा हुआ था। पर नेपाली वीरों को अंग्रेज कभी हरा नहीं सके। अंग्रेजों ने बंगाल को दो हिस्सों में बाँट कर एक नया देश बनाने का निर्णय तो 1906 में किया था। पर बंग भंग के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन के कारण उस समय वह निर्णय वापस लेना पड़ा था। फिर 1947 में पाकिस्तान के साथ पूर्वी बंगाल को जोड़कर अंग्रेज अपना मन्तव्य पूर्ण करने में सफल हुए थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन नेहरू जिन्ना की सहमति से अंग्रेज सरकार ने किया था। 1947 में पाकिस्तान के साथ तोड़ा गया पूर्वी पाकिस्तान 1971 में भारत की सहायता से बांग्लादेश बन गया। इस तरह अंग्रेजों ने भारत से जाने से पहले इस विशाल देश के सात खण्ड किये। सनातन संस्कृति के प्रभाव से जो भारत रामायण और महाभारत काल में विराटता के शिखर को छू रहा था। उस समय ईरान का नाम आर्यन था। यह भी ऋषियों की भूमि थी। पारसी यहां बहुसंख्य हुए तो पारस नाम पड़ा । पारसी देश बना जो इस्लाम के विवर में समा गया। इसी तरह कम्बोडिया अलग हुआ। यहाँ हिन्दू राजा कम्बोद राज्य करते थे। वह बौद्ध मत के प्रभाव में आये फिर तो सनातन संस्कृति से अलग होने के साथ यह देश भारत से अलग हो गया। भारत वर्ष से इंडोनेशिया, सिंगापुर, लाओस, वियतनाम, फिलीपीन्स, ब्रूनेई, मालदीव, थाईलैण्ड (श्यामदेश) अलग होकर नये देश बनते गये। यह सभी पहले बौद्ध बने थे।

1876 में अंग्रेजों ने अफगानिस्तान (उपगणस्थान) को भारत से अलग कर दिया। भूटान को 1906 में अलग किया। 1912 में तिब्बत को अलग किया। श्रीलंका को भारत से विलग करने की बारी 1835 में आयी। किन्तु श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता 1948 में दी गयी।

अपने देश का नाम भारत क्यों पड़ा इसका उत्तर कई लोग प्रभावशाली राजाओं के नाम का उल्लेख करके बताते हैं। यही कि उनके प्रताप को देखकर भारत नाम पड़ा। जबकि किसी व्यक्ति के नाम को महत्व देने की सनातन संस्कृति में कोई परम्परा नहीं रही है। भा अक्षर प्रकाश का प्रतीक है। प्राचीन वैदिक संस्कृति में सूर्य और अग्नि की पूजा प्रकाश के सन्दर्भ में की जाती थी। ज्ञान के प्रकाश को भी इससे जोड़ा गया। वह लोग जो ज्ञान की अन्वेषणा में रत रहते हैं वो भारतवासी हैं। भा शब्द से ज्ञान की देवी सरस्वती को भारती भी कहा गया है। ज्ञान के तप में जहाँ के लोग सदा रत (तल्लीन) रहते हैं वह भूमि भारत है। यही परिभाषा अब तक सबसे समीचीन लगती है।

हिमालय पर्वत का कुल क्षेत्रफल 595000 वर्ग किमी और हिन्दुकुश पर्वत का क्षेत्रफल 01 लाख 54488 वर्ग किमी है। हिमालय से आठ देशों भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, चीन, अफगानिस्तान की सीमाएं सीधे जुड़ी हैं। हिन्दुकुश का वास्तविक नाम हिन्दू कोह है। सिकन्दर ने इसका नाम कोकासोस इंदिकोस अर्थात भारत का पर्वत रखा था। हिन्दुकुश को संस्कृत भाषा में ऊपरी स्वर्ण पर्वत कहा जाता है। इस पर्वत श्रृंखला से भारत का चित्राल गिलगित बल्टिस्तान क्षेत्र (जिस पर पाकिस्तान अवैध रूप से नियन्त्रण किये है) जुड़ा है। इसके अतिरिक्त अफगानिस्तान पाकिस्तान की सीमाएं जुड़ी हैं। इस पर्वत श्रृंखला में अनेक दर्रे कहे जाने वाले संकरे रास्ते हैं। इन्हीं रास्तों से भारत पर आक्रमण करने वाले अनेक शत्रुओं की सेनाएं आती थीं। इसके लम्बे संकरे रास्ते पामीर पर्वत और पामीर के पठार के देशों से भारत को जोड़ते हैं। उज्बेकी लुटेरा तैमूल लंगड़ा (लंग) और उसके बाद उज्बेक लुटेरा बाबर भी इसी रास्ते से पहली बार भारत आया था। शक, हूण, मंगोल और एलेक्जेंडर भी हिन्दुकुश के रास्तों से भारत की सीमा में आया था। ■

अखण्ड भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य

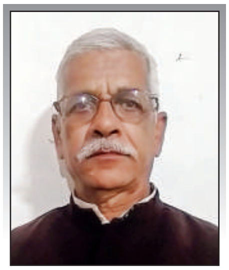

आर.एस.डी. 'चातक'
शिक्षाविद एवं साहित्यकार

'सांस्कृतिक भारत'... एक ऐसा भारत...एक ऐसा देश...जिसके समस्त प्राणियों का कार्य वैदिक मान्यताओं के अनुसार सम्पादित होता हो...एक ऐसा भूखण्ड...जिसके कार्यों का आदर्श समस्त प्राणिजगत के लिए कल्याणकारी हो...एक ऐसा देश जिसका उद्देश्य मानवीय मूल्यों का संरक्षण हो...जो देश नैतिक स्तर पर सम्पूर्ण विश्व को एक कुटुम्ब की मान्यता का सन्देश दे। एक ऐसा देश जो परस्पर शान्ति सौहार्द्र के द्वारा मानव संस्कृति का प्रबल पक्षधर हो। ईर्ष्या और वितृष्णा की परिधि से मुक्त हो कर 'आत्मवत सर्वभूतेषु' की आदर्श विचारधारा का अजस्त्र संवाहक हो...एक ऐसा देश जो रूढ़िवादी परम्पराओं में सामयिक और प्रासंगिक मूल्यों को समावेश करने के लिए वैचारिक क्रान्ति का विश्वव्यापी गगनघोष झंकृत कर सके। जिसके सम्पूर्ण कार्यों में धर्म और नीति का सम्यक् सामञ्जस्य हो।

हमारी प्राचीन मान्यताएँ, हमारे प्राथमिक संकल्प और पूर्व विस्तार की वे अस्पष्ट रेखाएँ जो आज किसी कारणवश संकुचित हो गई हैं। तथापि अपने उस असीम विस्तार का संकेत देती हैं। एक ऐसी चुनौती के रूप में कि हमको पुनः उसी सशक्त सम्प्रभुता के विस्तृत साम्राज्य को अपनी उपलब्धि का अपरोक्ष प्रतिमान सिद्ध करना है। 'जय भारत' के साथ 'जय हिन्द' का जयघोष हमारे पौरुष को उसी विशद धरातल का, उसी अखण्ड भारत का स्मरण कराता है जो कभी हमारा विराट स्वरुप था। सम्पूर्ण धरित्री का वह समृद्ध भूखण्ड - जो अखण्ड भारत का स्वर्णिम स्वप्न बन कर - राष्ट्रीय दायित्व के पटल पर हमारी जागृति को अपने होने का अस्तित्व बोध कराता है। जो हमारी संस्कृति का सनातन क्षेत्र है और वहाँ तक अपितु उससे और आगे तक हमारा वहाँ होना ही हमारी संस्कृति का अर्थ सिद्ध करता है।

परोक्ष रूप में हमारा भारत वहाँ तक है जहाँ तक हमारे भारत की संस्कृति है। इसी मान्यता के आधार पर हम अपनी संस्कृति को विस्तृत करना चाहते हैं। किसी की संस्कृति को स्वीकार कर हम उसके अधीन हो जाते है अथवा यह कहें कि जहाँ तक हमारी संस्कृति का साम्राज्य होता है वहाँ तक हमारा राष्ट्र ही प्रतीत होता है तो अनुचित न होगा। विस्तारवादी नीति हमारी सीमा सुरक्षा का एक अनिवार्य सोपान है जिसका अनुपालन युगों

युगों से होता आया है। जिसके उदहारण के लिए अनेकों युद्ध अथवा सन्धि-समझौते हुए हैं।

संसार के अन्य देशों की अपेक्षा हमारा भारत देश सांस्कृतिक समृद्धि की दृष्टि से अपनी विचित्र और अपूर्व स्थिति के कारण सबसे पृथक अस्तित्व रखता है। 'भौतिक संस्कृति और अभौतिक संस्कृति के द्वारा इस देश का आकर्षण और अधिक बढ़ जाता है' मानवीय व्यवहार की उत्कृष्टता और आवश्यक संसाधनों का प्राचुर्य इस देश की अक्षुण्ण निधि हैं। इस देश की आर्थिक प्रगति, सामाजिक सामञ्जस्य, सर्वधर्म समभाव, परस्पर स्नेह-सौहार्द्र और सहयोग की निःस्वार्थ भावना, आध्यात्मिक चिन्तन और सांस्कृतिक सम्पन्नता इस देश को अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध बनाते हैं। भारत का भौतिक सांस्कृतिक वैभव जहाँ मानव जगत की स्थूल आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है तो वहीं अभौतिक सांस्कृतिक वैभव मानव की उस परोक्ष आवश्यकता की पूर्ति करता है जिसे हम संसार में जीवनयापन करते हुए भी उसकी आसक्ति से विरक्त होने की जिज्ञासा रखते हैं और इसीलिए कहा गया है कि भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार 'आत्मा' है। शरीर और मन की शुद्धि की आवश्यकता मानव को अध्यात्म के लिए तैयार करती है। इसीलिए जब तक मानव का अंतस् विशुद्ध नहीं होता तब तक असंगत और अप्रासंगिक तर्क उसे उपयोगी प्रतीत होते हैं।

अभौतिक सांस्कृतिक वैभव मानव की उस परोक्ष आवश्यकता की पूर्ति करता है जिसे हम संसार में जीवनयापन करते हुए भी उसकी आसक्ति से विरक्त होने की जिज्ञासा रखते हैं और इसीलिए कहा गया है कि भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार 'आत्मा' है।

भारतीय संस्कृति का उद्देश्य समष्टि रूप से प्राणि जगत का कल्याण करना है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं और परम्पराओं के साथ नवीनता का समावेश भी परिलक्षित होता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महा सङ्गम है जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी, तिब्बत, मङ्गोल, द्रविण, हड़प्पाई और यूरोपीय धाराएँ समाहित हैं। ये धाराएँ भारतीय संस्कृति को इन्द्रधनुषीय संस्कृति या गङ्गा-यमुनी तहजीब में परिवर्तित करती हैं। भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरुप में विभिन्न विशेषताएँ हैं। अध्यात्म और भौतिकता में विशुद्ध समन्वय, पुरुषार्थ चतुष्टय, आश्रम चतुष्टय जैसी आध्यात्मिक व्यवस्थाओं का परिष्कृत रूप इस संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।

इस भारतीय संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाह्य क्षेत्र से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहाँ की संस्कृति से घुल-मिल गये हैं। अरबों, तुर्कों और मुगलों के माध्यम से यहाँ इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ तथापि भारतीय संस्कृति ने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखा। नवागत संस्कृतियों की गुणवत्ता को उदारतापूर्वक ग्रहण करना भी भारतीय संस्कृति की महानता ही है। आज यह संस्कृति भाषा, खान-पान, वेश-भूषा, कला, संगीत आदि के द्वारा हर प्रकार से वैश्विक संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत कर रही है। हड़प्पाकालीन सभ्यता की परम्पराएँ एवं प्रथाएँ जैसे मातृ देवी और पशुपतिनाथ की उपासना और योग आसन की व्यवस्था आदि आज भी भारतीय संस्कृति में दृष्टिगोचर होती हैं।

भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता के उच्च प्रतिमान हैं हमारे देश के आकर्षक, सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक उत्तुङ्ग पर्वत शिखर और

अजस्त्र प्रवाह से सम्पन्न पावन नदियाँ...जिनके तटों पर स्थित भिन्न भिन्न तीर्थस्थल जो हमारी भारतीय संस्कृति की आस्था और श्रद्धा का सक्रिय प्रतिनिधित्व करते हैं। आवागमन के साधनों की सहज व्यवस्था से देशाटन कर सकना भी अपनी संस्कृति के हस्तान्तरण का सशक्त माध्यम बन जाता है। बाह्य देशों से आने वाले पर्यटकों को यहाँ का संस्कृतिक परिदृश्य इसकी संस्कृति को वैश्विक पटल पर स्थापित करने में प्रमुख सहायक का कार्य करता है। अगणित मन्दिर, मस्जिद, गिरजागृह, गुरुद्वारे, मठ आदि भारतीय संस्कृति के ऐसे परिदृश्य हैं जहाँ मानवीय विचारधारा में दैवीय गुणों का स्वतः समावेश होता रहता है। हमारे प्राचीन भारत की व्यापक संस्कृति का क्षेत्र आज अखण्ड भारत के शीर्षक से भी विभूषित किया जाता है और इस क्षेत्र में प्रसृत सांस्कृतिक परिदृश्य हमारे भारत देश की अखण्डता के संस्मरण का संवाहक बन कर भारतीयों को उनके वास्तविक दायित्वों और कर्तव्यों का स्वतः बोध कराते हैं। विभिन्न परिस्थितियों की भूमिका में अनेकता के दर्शन होते हुए भी हमारी एकता-अखण्डता ही हमारे देश की महानता है और इस महानता में चार चाँद लगाने वाले सांस्कृतिक परिदृश्य इस देश को पृथ्वी का साक्षात नन्दन वन की संज्ञा देते हैं तो अतिशयोक्ति क्या है !

भारतीय संस्कृति में मानव और प्राकृतिक पर्यावरण के अटूट सम्बन्ध अर्थात 'मानव-प्रकृति-सह-सम्बन्ध' पर विशेष बल दिया गया है। भारत की विभिन्न कलाओं जैसे - मूर्ति कला, नृत्य कला, चित्र कला, लोक संस्कृति आदि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरुप का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। विभिन्न धर्म, पन्थ एवं वर्गों के लोगों का नेतृत्व इन कलाओं में परिलक्षित होता है जैसे मध्यकाल में 'इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य कला' और आधुनिक काल में 'विक्टोरियन शैली'। भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप केवल भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं में ही नहीं है अपितु उनके बाह्य क्षेत्र में भी है। भारत के अन्तः क्षेत्र में बौद्ध, जैन, हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के लोग और उनके पूज्य स्थल हैं जो शान्तिपूर्ण-सह-अस्तित्व का दर्शन कराते हैं।

संस्कृति का विशुद्ध रूप साहित्य में सर्वाधिक समर्थपूर्ण ढंग से अभिव्यञ्जित होता है। संस्कृति साहित्य का प्राण है जिसके कारण साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव का अनुभव किया जा सकता है। यहाँ की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करुणा, प्रेम, शान्ति, सहिष्णुता, विनम्रता, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय संस्कृति में पूर्णरूपेण अभिव्यक्त किया गया है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित स्वरुप संस्कृत भाषा के माध्यम से महाभारत, रामायण, कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों में स्पष्ट देखा जा सकता है। तमिल का 'सङ्गम साहित्य', तेलगु का 'अवधान साहित्य', हिन्दी का 'भक्ति साहित्य', मराठी का 'पोवाड़ा', बंगला का 'मङ्गल नीति' आदि भारतीय साहित्य-उद्यान के अमूल्य और सुगन्धित पुष्प हैं। इनकी संयुक्त माला निश्चित रूप से 'समेकित भारतीय संस्कृति' का पूर्णरूपेण प्रतिनिधित्व करती है।

गोस्वामी तुलसीदास मध्यकाल में भारतीय संस्कृति के समन्वय के उत्कृष्ट कवि के रूप में सर्वोच्च शिखर पर स्थापित हैं। उनका निम्नाङ्कित छन्द इस सन्दर्भ में एक सुदृढ़ उदाहरण प्रस्तुत करता है ----

'स्वपच सबर खस जमन जड़, पाँवर कोल किरात'
'रामु कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात'

हमारे भारत देश के इस महान सांस्कृतिक परिदृश्य पर तात्कालिक कतिपय नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुन्ध हमारी सांस्कृतिक जीवन शैली पर आरोपित की है उसे सावधानीपूर्वक हटाना होगा। इस धुन्ध ने सर्वग्राह्य परिभाषाओं के साथ कुछ ऐसे अस्वीकार्य अंश प्रक्षिप्त कर दिये हैं जिनके बल पर नास्तिक प्राणी को भी निन्दा करने का अवसर सहज ही उपलब्ध हो जाता है और हम उसे किसी महापुरुष का उपदेश मानते हुए बिना सोचे विचारे आँख मूँद कर मान्यता दे बैठते हैं।

इसलिए आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक विभूति का परिष्कृत स्वरुप बनाये रखें और इसकी सुदृढ़ आधारशिला पर नए और सामयिक मूल्यों व नई और प्रासंगिक संस्कृति का निर्माण करें। उसका उत्तरोत्तर विकास करने के लिए हर सम्भव सामूहिक प्रयास करें जिससे हमारे अखण्ड भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहे। ■

प्राचीन भारत की व्यापक संस्कृति का क्षेत्र आज अखण्ड भारत के शीर्षक से भी विभूषित किया जाता है और इस क्षेत्र में प्रसृत सांस्कृतिक परिदृश्य हमारे भारत देश की अखण्डता के संस्मरण का संवाहक बन कर भारतीयों को उनके वास्तविक दायित्वों और कर्तव्यों का स्वतः बोध कराते हैं।

देश की अखण्डता का प्रतीक है समान नागरिक संहिता

प्रशांत त्रिपाठी
अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली

समान नागरिक संहिता को लेकर भारत में चर्चा फिर आम है। किसी को ये बेहद जरूरी लग रहा है तो कुछ खास वर्ग के लोगों के लिए उनके धार्मिक अधिकार क्षेत्र में दखलंदाजी। राजनीति भी गरमाई हुई है। इन सब के बीच एक वकील होने के नाते कानून और संविधान की जानकारी और बदलते भारत के समाज की जरूरत की दृष्टि से क्या कहता है समान नागरिक संहिता के संवैधानिक अधिकारों को भारत का संविधान और क्यों हैं इसकी जरूरत इस लेख के माध्यम से यही बताने और समझने की एक कोशिश है।

हाल के दिनों में यूनिफार्म सिविल कोड यानी समान नागरिक संहिता को लेकर राजनैतिक माहौल काफी गरम रहा। एक ओर जहां देश की बहुसंख्यक आबादी समान नागरिक संहिता लागू करने की बात कर रही है तो वहीं अल्पसंख्यक वर्ग इसके विरोध में खड़ा है। एक तरफ उत्तराखंड सरकार समान नागरिक संहिता पर मसौदा तैयार करने के लिए एक समिति का भी गठन कर चुकी है तो उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और असम के मुख्यमंत्री भी कॉमन सिविल कोड लाने का पूरा मन बना चुके हैं।

इस लेख को आगे बढ़ाने से पहले आइए सबसे पहले समझ लेते हैं कि क्या हैं समान नागरिक संहिता? अगर देश में यूनिफार्म सिविल कोड यानी समान नागरिक संहिता लागू होता है तो जात, धर्म से परे देश के हर एक नागरिक के लिए एक समान कानून होगा। इस कानून के बाद धर्म के आधार पर कोई अलग कोर्ट या अलग व्यवस्था नहीं होगी। जबकि अभी देश में सभी धर्मो के लिए अलग अलग नियम हैं।

समान नागरिक संहिता के पक्ष में सबसे बड़ा तर्क यह है कि इससे समाज में एकरूपता लाने में मदद मिलेगी। समान नागरिक संहिता लागू हो जाने से विवाह, गोद लेने की व्यवस्था, तलाक के बाद महिलाओं को उचित भरण पोषण देने में समानता लाई जा सकेगी। संविधान के अनुच्छेद 44 में नागरिक संहिता की विस्तृत चर्चा की गई है। इससे साफ है कि संविधान निर्माता इस बात को लेकर आर्टिकल 44 के माध्यम से ये सुनिश्चित कर गए थे कि देश में आजादी के कुछ सालों बाद भारत को धर्म और जात से ऊपर रख कर यूनिफॉर्म सिविल कोड के रूप में वो कानून लागू हो जिसमें संविधान के मूल अधिकारों में विधि के शासन की अवधारणा विद्यमान हो और समाज के सभी वर्गों के लिए समान न्याय प्रक्रिया हो। किसी के साथ भी न्याय और कानून को लेकर कोई भेद-भाव नहीं होना चाहिए। लेकिन मुस्लिम पर्सनल लॉ धर्म की आड़ में महिलाओं के अधिकारों को छीनता आ रहा है। भारतीय मुसलमान समाज में सरिया कानून के अंतर्गत एक अलग कोर्ट और कानून व्यवस्था चलती है। ऐसे में समान नागरिक संहिता का लागू न होना एक प्रकार से विधि के शासन और संविधान की प्रस्तावना का उल्लंघन है।

आइए समझते हैं कितना महिला विरोधी है मुस्लिम पर्सनल लॉ और क्या कहता है भारत का कानूनः महिला अधिकारों को लेकर मुस्लिम पर्सनल लॉ में एक नहीं अनेक परेशानियां हैं-

1. मुस्लिम पर्सनल लॉ में बहु-विवाह करने चाहिए। लेकिन अन्य धर्मों में एक पति एक पत्नी का नियम बहुत कड़ाई से लागू है। बांझपन या नपुंसकता जैसा उचित कारण होने पर भी हिंदू, ईसाई, पारसी के लिए दूसरा विवाह अपराध है और IPS की धारा 494 में 7 वर्ष की सजा का प्रावधान है। इसीलिए कई लोग दूसरा विवाह करने के लिए मुस्लिम धर्म अपना लेते हैं। जो धर्मांतरण का भी कारण बनता है। ऐसे में धर्म से ऊपर उठ कर सभी को समान अधिकार देते हुए समान कानून लागू होने चाहिए।

2. गोद लेने और भरण-पोषण करने का नियम भी हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई के लिए अलग-अलग है। मुस्लिम महिला गोद नहीं ले सकती है। अन्य धर्मों में भी पुरुष प्रधानता के साथ गोद लेने की व्यवस्था लागू है। गोद लेने

का अधिकार किसी भी तरह से धार्मिक या मजहबी विषय नहीं है बल्कि सिविल राइट और ह्यूमन राइट का मामला है इसलिए यह भी पूर्णतः जेंडर न्यूट्रल, रिलिजन न्यूट्रल और सबके लिए यूनिफार्म होना चाहिए।

3. विवाह विच्छेद के बाद हिंदू बेटियों को तो गुजारा भत्ता मिलता है लेकिन तलाक के बाद मुस्लिम बेटियों को गुजारा भत्ता नहीं मिलता। गुजारा भत्ता किसी भी तरह से धार्मिक या मजहबी विषय नहीं है बल्कि सिविल राइट और ह्यूमन राइट का मामला है। इसलिए यह भी पूर्णतः जेंडर न्यूट्रल, रिलिजन न्यूट्रल और सबके लिए यूनिफार्म होना चाहिए।

4. मुस्लिम समुदाय में पर्सनल लॉ के आधार पर पैतृक संपत्ति में पुत्र-पुत्री तथा बेटा-बहू को समान अधिकार प्राप्त नहीं है तथा धर्म क्षेत्र और लिंग आधारित विसंगतियां हैं। विरासत और संपत्ति का अधिकार किसी भी तरह से धार्मिक या मजहबी विषय नहीं बल्कि सिविल राइट और ह्यूमन राइट का मामला हैं, इसलिए यहाँ भी पूर्णतः भारतीय दंड संहिता सबके लिए समान होना चाहिए।

5. पर्सनल लॉ लागू होने के कारण विवाह विच्छेद की स्थिति में विवाहोपरांत अर्जित संपत्ति में पति-पत्नी को समान अधिकार नहीं हैं। जबकि यह किसी भी तरह से धार्मिक या मजहबी विषय नहीं बल्कि सिविल राइट और मानव अधिकार का मामला है। संविधान के आर्टिकल 44 को ध्यान में रखते हुए यह भी पूर्णतः सबके लिए समान होना चाहिए।

6. अलग-अलग धर्मों के लिए अलग-अलग कानून लागू होने के कारण मुकदमों की सुनवाई में अत्यधिक समय लगता है। भारतीय दंड संहिता की तरह सभी नागरिकों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक समग्र समावेशी एवं एकीकृत कानून होना चाहिए ताकि वादी और न्यायालय दोनों का समय बचे।

7. पर्सनल लॉ लागू होने के कारण अलगाववादी मानसिकता बढ़ रही है। हम अखण्ड राष्ट्र के निर्माण की दिशा में त्वरित गति से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। भारतीय दंड संहिता की तरह सभी नागरिकों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक समग्र समावेशी एवं एकीकृत भारतीय नागरिक संहिता होने से एक भारत श्रेष्ठ भारत का सपना साकार होगा।

धर्म क्षेत्र और लिंग आधारित विसंगतियां है। विरासत और संपत्ति का अधिकार किसी भी तरह से धार्मिक या मजहबी विषय नहीं बल्कि सिविल राइट और ह्यूमन राइट का मामला है इसलिए यहाँ भी पूर्णतः भारतीय दंड संहिता सबके लिए समान होना चाहिए।

8. आर्टिकल 14 के अनुसार देश के सभी नागरिक एक समान हैं, आर्टिकल 15 जाति धर्म भाषा क्षेत्र और जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है, आर्टिकल 16 सबको समान अवसर उपलब्ध कराता है।

आर्टिकल 19 देश में कहीं पर भी जाकर पढ़ने, रहने, बसने, रोजगार करने का अधिकार और आर्टिकल 21 सबको सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार देता है। आर्टिकल 25 धर्म पालन का अधिकार देता है, अधर्म का नहीं। रीतियों को पालन करने का अधिकार देता है, कुरीतियों का नहीं। प्रथाओं को पालन करने का अधिकार देता है, कुप्रथाओं का नहीं। देश के सभी नागरिकों के लिए एक समग्र समावेशी और एकीकृत भारतीय नागरिक संहिता लागू होने से आर्टिकल 25 के अंतर्गत प्राप्त मूलभूत धार्मिक अधिकार जैसे पूजा, नमाज या प्रार्थना करने, व्रत या रोजा रखने तथा मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा का प्रबंधन करने या धार्मिक स्कूल खोलने, धार्मिक शिक्षा का प्रचार प्रसार करने या विवाह, निकाह की कोई भी पद्धति अपनाने या मृत्यु पश्चात अंतिम संस्कार के लिए कोई भी तरीका अपनाने में किसी भी तरह का हस्तक्षेप नहीं होगा। आर्टिकल 37 में स्पष्ट रूप से लिखा है कि नीति निर्देशक सिद्धांतों को लागू करना सरकार की फंडामेंटल ड्यूटी है जिस प्रकार संविधान का पालन करना सभी नागरिकों की फंडामेंटल ड्यूटी है उसी प्रकार संविधान को शत प्रतिशत लागू करना फंडामेंटल ड्यूटी है। जिस तरह से सुनवाई के दौरान कोर्ट को भी अलग-अलग कानून होने की वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और फैसले लंबित रह जाते हैं, अब कोर्ट को भारत के बहुआयामी समाज के लिए एक समान नागरिक संहिता वाली व्यवस्था की जरूरत महसूस हो रही है। समाज का बड़ा वर्ग इस कानून के इंतजार में पार्लियामेंट की तरफ टकटकी लगाए बैठा है। इंतजार बस एक मसौदे को कानूनी रूप देने का है।

जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और लिंग आधारित अलग-अलग कानून 1947 के विभाजन की बुझ चुकी आग में सुलगते हुए धुएं की तरह है। धर्म के आधार पर बनी ये अलग अलग कानूनी व्यवस्था विस्फोटक होकर देश की एकता को खण्डित करने पर आमादा है। कानून व्यवस्था अगर एक राहत है तो समाज की शांति और सोच पर भी इसका असर पड़ता है। धर्म वाला कानून कट्टरवादिता का वो दूसरा रूप है जो देश में विघटनकारी और अलगाववादी सोच को जन्म देता है। इन सब को देखते हुए भारत में समान नागरिक संहिता अत्यंत आवश्यक है। ■

प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा और एलन मस्क

रुद्र प्रताप दुबे
सामाजिक एवं राजनीतिक विषय

कितना रोचक तथ्य ! प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल में हुई अमेरिका यात्रा उनकी पहली 'राजकीय यात्रा' है। हालांकि 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बनने के बाद पिछले 9 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बतौर प्रधानमंत्री 7 बार अमेरिका जा चुके हैं लेकिन नियम ये कहता है कि अमेरिका में जब वहां के राष्ट्रपति दुनिया के किसी नेता को खुद आमंत्रित कर, खास तरीके से उसका व्हाइट हाउस में 'औपचारिक स्वागत' करते हैं, तो उसे 'स्टेट विजिट' कहा जाता है और इस तरह की राजकीय यात्राओं को दो देशों के मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों की उच्चतम अभिव्यक्ति माना जाता है।

अमेरिका में प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा के दौरान होने वाली हर मीटिंग के अलग मायने थे। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की एक मुलाकात जिसे विश्व कौतूहल की दृष्टि से देख रहा था वो ट्विटर, स्पेस एक्स और टेस्ला जैसी कंपनियों के मालिक एलन मस्क के साथ थी। जिस तरह इंटरनेट का विस्तार होते हुए सोशल मीडिया कम्पनियां शक्तिशाली होती गई, AI, Chat GPT ने दुनिया भर के बाजार को प्रभावित कर दिया, लोगों की पसंद-नापसंद बाजार के हवाले हो गयी है, उस समय ट्विटर के मालिक का ये कहना कि, 'मैं मोदी का फैन हूँ' के बड़े निहितार्थ निकले।

भारतीय प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा में अमेरिका की टॉप 20 कंपनियों के सीईओ से मिलने का कार्यक्रम था लेकिन एलन मस्क के साथ हुई मुलाकात ने वैश्विक परिदृश्य पर सबसे अधिक ध्यान आकर्षित किया और ऐसा क्यूँ है इसे, ऐसे समझना होगा कि एलन मस्क का भारत के बारे में सकारात्मक बोलना अमेरिका के बाजार का भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति झुकाव को दिखाता है। मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए मस्क जब ये कहते हैं कि 'पूरी दुनिया में भारत एक ऐसा

देश है जहाँ सबसे अधिक संभावनाएं हैं'.. तो ये केवल बयानों तक सिमटती बात नहीं होती बल्कि ये दुनिया के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में शामिल एक व्यक्ति का दुनिया को निवेश करने का सन्देश होता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एलन मस्क के साथ ये पहली मुलाकात नहीं थी। साल 2015 में जब प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका का दौरा किया था उस दौरान वो कैलिफोर्निया में टेस्ला मोटर्स फैक्ट्री गए थे, जहां पर मस्क ने उन्हें फैक्ट्री का दौरा कराया था। हालांकि पिछली बार और इस बार की मुलाकात के बीच काफी कुछ बदल चुका है। एक तरफ एलन मस्क ने ट्विटर टेकओवर किया और विश्व की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं पर पैसा लगाया, दूसरी तरफ नरेंद्र मोदी देश और विदेश में निरंतर लोकप्रिय और शक्तिशाली होते गए।

इस मुलाकात का हमारे पड़ोसी देश पर कितना असर पड़ा उसे ऐसे देखिये कि 'द पाकिस्तान' डेली अखबार के संपादक हमजा अजहर ने प्रधानमंत्री मोदी और एलन मस्क की मुलाकात के बाद मस्क और प्रधानमंत्री मोदी की फोटो लगाते हुए कहा कि 'पाकिस्तान को भी पीएम मोदी की नीति का पालन करना चाहिए और उनकी हालिया कूटनीतिक यात्राओं से कूटनीति को सीखना चाहिए।' इस बार की नरेंद्र मोदी और एलन मस्क की मुलाकात ने न केवल विश्व परिदृश्य में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है बल्कि देश में भी मोदी विरोधियों को चुप कराने का काम किया है। ट्विटर के संस्थापक जैक डोर्सी ने ट्विटर से निकाले जाने के बाद भारत सरकार पर जो आरोप लगाए थे, उन आरोपों पर मस्क ने स्पष्ट कहा कि 'स्थानीय सरकार के कानूनों का पालन करना ही चाहिए। हम स्थानीय सरकार के कानून का पालन नहीं करेंगे तो हमें वहां काम बंद करना होगा।'

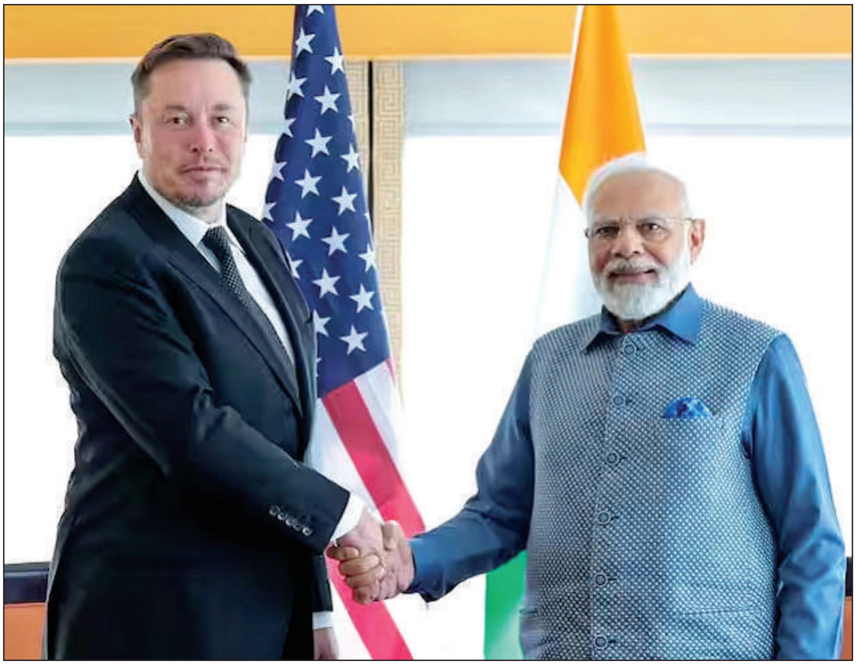

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एलन मस्क के साथ ये पहली मुलाकात नहीं थी। साल 2015 में जब प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका का दौरा किया था उस दौरान वो कैलिफोर्निया में टेस्ला मोटर्स फैक्ट्री गए थे, जहां पर मस्क ने उन्हें फैक्ट्री का दौरा कराया था।

एलन मस्क इस मुलाकात के बाद जहाँ एक तरफ भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक कार टेस्ला को ले जाने को लेकर उत्साहित हैं वहीं दूसरी तरफ उन्होंने ये भी स्वीकार किया कि सस्टेनेबल एनर्जी के भविष्य के लिए भारत में बड़ी संभावनाएं है। मस्क ने कहा कि, 'मैं कह सकता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी वास्तव में भारत के लिए सही चीजें करना चाहते हैं। वह नई कंपनियों का खुले मन से स्वागत करना चाहते हैं और उनका समर्थन करते हैं। इसके साथ ही वो इसका भी ख्याल रखते हैं कि इससे भारत का फायदा हो। यही होना चाहिए।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा को लेकर अमेरिकी उद्योगपतियों ने जो उत्साह दिखाया, निश्चित तौर पर वो भारत के लिए भविष्य की राहों को सरल और सुगम बनाएगा। ■

सिनेमाई कला में हो मानवीय स्पर्श

डॉ. यशार्थ मंजुल, सहायक आचार्य
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

हाल ही में प्रदर्शित 'आदिपुरुष' विवादों में रही। इसके पीछे का मुख्य कारण फिल्म में प्रयोग किए गए संवाद हैं। रामायण और महाभारत पर आधारित कंटैंट देखने की इच्छा की तीव्रता लोगों में अधिक होती है इसी लिए शुरूआती दिनों में अच्छा व्यापार करने के पश्चात इसमे गिरावट आई। मनोज मुंतशिर जो इस फिल्म के संवाद लेखक हैं। हाल ही में दर्शकों से फिल्म के संवादों को लेकर माफी भी मांगी गई। फिल्म के चर्चा में अधिक आने का कारण फिल्म का रामायण पर आधारित होना था परंतु चित्रण में अनुरूपता न होने के कारण से ये फिल्म दर्शकों के कोप का भाजन बन गई। ये फिल्म यूरोपियन शैली में बनी फिल्मों का अनुकरण है जिसमे बिना विचार के यांत्रिकता को प्रधानता दी गयी है। ये पूरी तरह से एक विडियो गेम का प्रारूप जैसी प्रतीत होती है जिसमे भावहीन अभिनय और भाषाहीन संवाद के माध्यम से दर्शकों से संबंध स्थापित किया जा रहा है। तकनीक ने अभिनय कला, गायन कला और चित्रकला को पूरी तरह से निगल लिया है। यंत्रो से लबरेज पात्र पूरी तरह से एक डी- हूमनाइज हो चुकी मशीन जैसा लगता है। यहाँ कथाकार से अधिक महत्वपूर्ण एनिमेटर हो गया है। ये सब यूरोपियाई सिनेमा का एक अंधानुकरण है जो भारतीय भाव और भूमि से जुड़ने में असमर्थ है। ये उस सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है जिसका उद्देश्य मानव मन में रस का संचार करना नहीं बल्कि एक सतही उत्साह पैदा करना है, जबकि भारतीय परंपरा में अंतर्मन से रस का उत्पन्न कर पाना ही सच्ची कला का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। यहाँ उल्लेख करना समीचीन होगा कि कई बरस पहले फ्रेंकफर्ट चिंतन पद्दती के प्रतिनिधि वाल्टर बेंजामिन ने अपने चर्चित निबंध 'आर्ट इन द एज ऑफ मैकानिकल रिप्रोडक्शन' में लिखा था कि 'मशीनी युग में कला आभाहीन होने लगी है क्योंकि वह मानवीय स्पर्श से पूर्णतया मुक्त हो चली है'। ऐसा ही विचार भारतीय कला के समालोचक अरविंद केंटीश कुमार स्वामी ने भी प्रस्तुत किया था, वो भी मशीनी कला के जबर्दस्त विरोधी थे क्योंकि वह उसे पाश्चात्य सभ्यता का आरोपण मानते थे। आदिपुरुष का मानवीय स्पर्श से मुक्त होने का कारण इसका पूर्णतः मशीन आधारित हो जाना है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान में वो दृश्य-श्रव्य उत्पाद जिसकी ओर चिंतित होना स्वाभाविक है वो है ओटीटी पर लोकप्रिय कंटैंट में अश्लीलता। वर्तमान में वीओडी (वीडिओ ऑन डिमांड) के क्षेत्र में एक बड़े ग्लोबल जायंट (global giant) नेट्फ़्लिक्स के द्वारा हाल ही में 4 छोटी फिल्मों के संकलन का प्रदर्शन किया गया, इसका नाम है लस्ट स्टोरीस 2(Lust Stories 2) अर्थात वासना आधारित कहानियों का द्वितीय भाग। इसका प्रथम भाग भी कुछ वर्ष पहले प्रदर्शित किया गया था। ये चार छोटी फिल्मों का संकलन है। प्रश्न है निर्माणकर्ताओं द्वारा इन फिल्मों के निर्माण का कारण क्या है? न ही इसमे किसी भी प्रकार का मनोरंजन है और न ही रसरंजन। इसमे एक प्रकार की विक्षिप्तता है जिसे सामाजिक मान्यता दिलाये

जाने का प्रयास नेटि्फ़्लक्स जैसे वितरण संगठन के द्वारा किया जा रहा है। ये भी तो यूरोपियाई सिनेमा का एक अंधानुकरण है जो भारतीय भाव और भूमि से जुड़ने में असमर्थ है। इन फिल्मों में परोसी गई अश्लीलता के कारण यहाँ उसका कथानक भी लिख पाना संभव नहीं। इन फिल्मों के संकलन में प्रथम फिल्म में दादी और पोती के बीच के संवाद आरोपित लगते है। मैं यहाँ पाठकों से एक प्रश्न करना चाहता हूँ कि क्या भारत की ग्रामीण या शहरी संस्कृति में एक दादी और पोती के बीच इस तरह के संवाद होते हैं? ये भारतीय भाव और भूमि से किसी भी तरह नहीं जुडते। कुछ अंग्रेजी भाषा के पोर्टल के द्वारा इनके ऊपर प्रचारात्मक समीक्षाएं लिखी जा रही हैं। इन फिल्मों का पब्लिक डोमेन में होना और इस पर अँग्रेजी के बड़े पोर्टल द्वारा इस प्रकार से प्रचारात्मक सामग्री लिखा जाना एक पूरी पीढ़ी के दिमाग को भ्रष्ट कर सकने में सक्षम है। चिंता का विषय है इन फिल्मों का फिल्म उद्योग के ए लिस्टेर्स (A Listers) द्वारा बनाया जाना और इसमे सहभागी होना। इन 4 फिल्मों के निर्देशक हिन्दी फिल्म उद्योग के नामचीन चेहरे हैं। इन 4 फिल्मों को निर्देशित किया है, आर बाल्की, कोंकणा सेन शर्मा, सूजोय घोष एवं अमित शर्मा ने। यहाँ एक बात रेखांकित करना आवश्यक है कि इन सभी निर्देशकों को पूर्व में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। परंतु इन फिल्मों को देख कर लगता नहीं कि इस स्तर के पुरस्कार पाने वालों के भीतर किसी भी तरह का सामाजिक बोध शेष है।

यहाँ उल्लेख करना समीचीन होगा कि कई बरस पहले फ्रेंकफर्ट चिंतन पद्धती के प्रतिनिधि वाल्टर बेंजामिन ने अपने चर्चित निबंध 'आर्ट इन द एज ऑफ मैकानिकल रिप्रोडक्शन' में लिखा था कि 'मशीनी युग में कला आभाहीन होने लगी है क्योंकि वह मानवीय स्पर्श से पूर्णतया मुक्त हो चली है' । ऐसा ही विचार भारतीय कला के समालोचक अरविंद कुमार स्वामी ने भी प्रस्तुत किया था, वो भी मशीनी कला के जबर्दस्त विरोधी थे क्योंकि वह उसे पाश्चात्य सभ्यता का आरोपण मानते थे ।

कला मर्मज्ञ -आनंद कुमार स्वामी

कुछ समय पूर्व ओटीटी पर उपलब्ध सामग्री के संबंध में जस्टिस अजय रस्तोगी एवं जस्टिस सी टी रविकुमार की पीठ ने निर्माताओं से टिप्पणी करते हुए कहा कि, कुछ तो किया जाना चाहिए। आप इस देश की युवा पीढ़ी के दिमाग को प्रदूषित कर रहे हैं। ओटीटी कंटैंट सभी के लिए उपलब्ध है। आप लोगों को किस तरह का विकल्प प्रदान कर रहे हैं। प्रेमचंद सिनेमा को साहित्य का ही विस्तार मानते थे। उनका मानना था कि वो पुस्तक जो पशु - भावनाओं को प्रबल करे हम उसे साहित्य में स्थान नहीं देंगे। ऐसी ही अपेक्षा वो सिनेमा के लिए भी करते थे पर अफसोस ऐसा हुआ नहीं। लस्ट स्टोरीस द्वितीय में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्मकारों द्वारा मनुष्य के भीतर की पशुताओं को प्रबल करने और उसे सामाजिक मान्यता दिलाने का कार्य किया जा रहा है। सभी के लिए उपलब्ध ये सामग्री घरों की बैठकों और फोन पर आसानी से उपलब्ध है। इससे बच पाना मुश्किल है। दर्शकों के विरोध के कारण मनोज मुंतशिर ने तो रामायण आधारित आदिपुरुष के संवादों के लिए माफी मांग ली परंतु धर्म में निहित नैतिक मूल्यों पर चोट करने के लिए और एक पूरी पीढ़ी को अनैतिकता के अंधेरे में ढकेलने वाले ये फिल्मकार कब माफी मांगेंगे? ■

श्रावण मास में स्वास्थ्य के प्रति रहें सजग

डा. ओमेन्द्र पाल सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, बाल रोग विभाग,
इंस्टिट्यूट ऑफ आयुष मेडिकल साइंसेज, लखनऊ

सावन में बारिश की फुहारों से मौसम सुहाना हो जाता है। पूरे वर्ष में यही ऐसा समय है जब मौसम तेजी से बदलता है, कभी गर्मी - उमस तो कभी हल्की ठंड। बारिश का मौसम और चाय पकोड़ों का रिश्ता अटूट है। परन्तु यह बदलता मौसम और ज्यादा तला भुना खाना स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। अतः इस समय अपनी सेहत का खास ख्याल रखें। आयुर्वेद के अनुसार इस काल में वातदोष का प्रकोप होता है जिससे जठराग्नि मंद हो जाती है अर्थात हमारी पाचन शक्ति अपेक्षाकृत कमजोर हो जाती है। इसलिए इस समय गरिष्ठ भोजन जैसे मांसाहार, कटहल, अरबी, उड़द, मैदे से बने पदार्थ, समोसा इत्यादि का सेवन न करें। इन सबकी जगह सुपाच्य आहार जैसे मौसमी सब्जी, मूंगदाल, खिचड़ी, गेहूं एवं जौ से बने खाद्य पदार्थों को खाने से हमारी जठराग्नि प्रदीप्त रहेगी और अपच नहीं होगी।

खाना और पानी के सम्बन्ध में आचार्य चाणक्य के दिए सूत्र को हमेशा ध्यान रखें ''भोजने च अम्रतम वारि, भोजनान्ते विषप्रदम''। अर्थात भोजन के साथ एक दो घूँट पानी पी सकते हैं परन्तु भोजन के तुरंत बाद पानी बिलकुल नहीं पीना चाहिए। यह विष के समान कार्य करता है, जठराग्नि को क्षीण कर अजीर्ण से होने वाली परेशानियों जैसे गैस, अपच, कब्ज आदि को जन्म देता है। इन दिनों उमस अधिक होने के कारण पसीना अधिक आता है इसलिए कम से कम 3 से 4 लीटर पानी प्रतिदिन अवश्य पियें जिससे डिहाइड्रेशन से बचेंगे। काबोर्नेटेड पेय (कोल्ड ड्रिंक्स) के सेवन से स्वयं को दूर रखें, इसमें शुगर की मात्रा बहुत अधिक होती है, अतः यह बहुत हानिकारक होते हैं। इन दिनों संक्रामक बीमारियों का खतरा अधिक हो जाता है, अतः साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें जैसे बाहर से आने के बाद और खाना खाने से पहले साबुन से हाथ अवश्य धोएं। पीने के पानी की स्वच्छता पर यदि संदेह हो तो इसे उबालकर ही प्रयोग में लायें। बारिश के इस मौसम में हरी साग सब्जियां, मौसमी फल और सलाद को प्रयोग में लाने से पहले गुनगुने पानी से खूब अच्छी प्रकार से धो लेना चाहिए।

ऋतु प्रभाव से इस मौसम में शारीरिक बल कम रहता है, अतः अत्यधिक व्यायाम से बचना चाहिए। परन्तु नियमित रूप से 20 - 30 मिनट साधारण व्यायाम को अवश्य देने चाहिए। अपनी शारीरिक क्षमता एवं समय की उपलब्धता के आधार पर हम कोई भी व्यायाम चुन सकते हैं जैसे टहलना, दौड़ना, साइकिलिंग, तैरना इत्यादि। परन्तु समयाभाव में सूर्यनमस्कार सर्वोत्तम व्यायाम है। इसमें सभी महत्वपूर्ण आसनों का समावेश है। रात्रि में 6 से 8 घंटे की अच्छी नींद शरीर और मन में पुनः उर्जा का संचार करती है, परन्तु इस मौसम में दिन में सोना वर्ज्य है।

बारिश की फुहारों से मौसम सुहाना हो जाता है। पूरे वर्ष में यही ऐसा समय है जब मौसम तेजी से बदलता है, कभी गर्मी - उमस तो कभी हल्की ठंड। बारिश का मौसम और चाय पकोड़ों का रिश्ता अटूट है । परन्तु यह बदलता मौसम और ज्यादा तला भुना खाना स्वास्थ्य को खराब कर सकता है ।

दिन भर ए.सी. में बैठने की प्रवृत्ति से बचें। इससे अचानक तापमान परिवर्तन होता है और पसीना आना भी रुक जाता है जो हमारे शरीर को बीमार कर सकता है। क्योंकि पसीना आना हमारे शरीर से अपद्रव्य (toxins) निकालने एवं रक्तचाप नियंत्रित करने की प्रक्रिया है। शरीर के साथ साथ मन के स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी अत्यंत आवश्यक है। जीवन में तनाव आना एक सामान्य प्रक्रिया है, इसे रोका नहीं जा सकता। परन्तु तनाव प्रबंधन का गुण विकसित करने से चिंता, अवसाद जैसे विकारों से मन ग्रसित नहीं होता। अच्छी नींद लेना, नित्य व्यायाम और प्राणायाम तनाव को कम करने की आसान और कारगर तकनीकें हैं। स्वस्थ रहने के लिए हमें अपनी दिनचर्या में इन्हें अवश्य ही स्थान देना होगा। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर हम अपने शरीर और मन को स्वस्थ रख सावन के सुहावने मौसम का भरपूर आनंद ले सकेंगे।

विनोद शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की नजर में नोएडा

हम देखते हैं कि हमारे जीवन में या आस पास कभी कभार कुछ चीजें अनायास ही हो जाती हैं। नोएडा शहर कभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उत्तर भारत का सबसे बडा हब होगा यह भी शायद नियोजकों ने नहीं सोचा था। दरअसल सेक्टर 16 ए में यूपी के तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने नोएडा में फिल्न सिटी की आधारशिला रखी थी तब छोटे-छोटे स्टूडियो के हिसाब से सेक्टर 16 ए को चुना गया। नोएडा के तत्कालीन चेयरमैन योगेश चंद्रा ने वर्ष 1986 में नोएडा में फिल्म सिटी बनाने की योजना तैयार की। इसे एक साल बाद वर्ष 1987 में अमली जामा पहनाने का काम शुरू हुआ। फिल्म स्टूडियो बनाने वाले कई फिल्म निर्माता मुंबई से नोएडा में आए मगर चुनिंदा ही यहां टिक पाए। बाकी अपने-अपने भूखंड बेचकर चले गए। यही फिल्म सिटी इस समय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सेंटर बन गई है। इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। आज हम देश के सबसे बडे. मीडिया हब के रूप में नोएडा सिटी को कह सकते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है।

बड़े-बड़े फिल्म निर्माताओं ने खरीदे थे स्टूडियो के लिये प्लॉटः देश का कोई चैनल ऐसा नहीं है जिसका स्टूडियो नोएडा में नही है। एक दौर था जब दूरदर्शन का एकछत्र राज हुआ करता था। तब भी नोएडा शहर के फिल्म सिटी से तीन ऐसे कार्यक्रम तैयार होते थे जिनकी शुरूआत सुबह के कार्यक्रम से होती थी। इनमें दूरदर्शन के कार्यक्रम सुबह-सवेरे की शूटिंग मारवाह स्टूडियो में होती थी। भक्ति सागर कार्यक्रम की शूटिंग टी-सीरीज स्टूडियो में और देश में 24 घंटे न्यूज देने वाले जी न्यूज चैनल के कार्यक्रम जीटीवी स्टूडियो से प्रसारित होते थे। एक समय में नोएडा फिल्म सिटी में बारह स्टूडियो हुआ करते थे। इनमें ईगल फिल्म स्टूडियो का शुभारंभ तत्कालीन सूचना व प्रसारण मंत्री एच.के एल भगत ने किया था। इसके साथ ही टी-सीरीज का लक्ष्मी स्टूडियो, यश चोपडा का आदित्य, एल वी प्रसाद का एल वी प्रोडक्शन, पद्मिनी कोल्हापुरी का पद्मिनी स्टूडियो व रोमेश शर्मा का काबूकी स्टूडियो था। इसके अलावा संदीप मारवाह का मारवाह स्टूडियो, सुरेंद्र कपूर का सुरेंद्र कपूर स्टूडियो बनाया गया था।

अब बदल गया फिल्म सिटी का स्वरूपः इस समय देखें तो इलेक्ट्रॉनिक हब के रूप में सीएनबीसी, टीवी 9 भारत वर्ष, टाईम्स नाऊ, जी स्टूडियो, भास्कर समूह, टाईम्स समूह, न्यूज 24, इंडिया टूडे, न्यूज 18 आदि और संदीप मारवाह की एशियन अकादमी ऑफ फिल्म एंड टीवी के जरिए बड़ी तादाद में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े लोग काम कर रहे हैं। इसके साथ ही अब सेक्टर 60 में एबीपी न्यूज, सेक्टर 80 में इंडिया टीवी आदि चैनलों के मुख्यालय हैं। सेक्टर 57 में सुदर्शन चैनल का और सेक्टर 62 में प्रेरणा संस्थान का स्टूडियो भी है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए है बेहतर माहौलः नोएडा में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे ज्यादा फायदा दिल्ली-एनसीआर की वजह से मिल रहा है। नोएडा फिल्म सिटी के लिए वर्ष 1986 में प्रस्ताव देने वाले मारवाह स्टूडियो के मालिक संदीप मारवाह का कहना है कि दिल्ली से कनेक्टिविटी, एयरपोर्ट और मेट्रो की सर्विस ने इसे आसान बना दिया है। यहां सभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हाऊस ने अपने-अपने प्रशिक्षण संस्थान भी स्थापित कर लिए हैं। नोएडा अकेला ऐसा शहर है जिसके एक तरफ दिल्ली से मेरठ-हरिद्वार तक और दूसरे गाजियाबाद से अलीगढ़ तक साथ ही नोएडा से आगरा होते हुए लखनऊ तक सीधे कनेक्टिविटी एक्सप्रेस वे के जरिए हो रही है।

इस समय कई अंतर्राष्ट्रीय इवेंट भी नोएडा व ग्रेटर नोएडा में हो रहे हैं। दिल्ली के पास होने के कारण कई बड़ी फिल्मों की शूटिंग का स्थल भी नोएडा बन गया है। इस माहौल में कई प्रतिभाएं निखरकर मीडिया के क्षेत्र में व फिल्मों की तरफ बढ़ रही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नोएडा फिल्म सिटी में फिल्म निर्माताओं के उत्साह ना दिखाने के कारण ये स्टूडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हाउस के मुख्यालय बन गए है। इससे मीडिया से जुड़े लोगों का भविष्य चमकेगा। ■

सामाजिक समरसता का प्रतीक पर्व

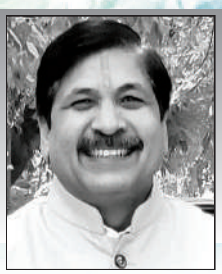

प्रोफेसर (डॉ.) हरेन्द्र सिंह, सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, एवं राष्ट्रवादी चिंतक

विभिन्न संस्कृतियों से परिपूर्ण एवं समृद्ध विरासत की पुण्य भूमि हमारे देश भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही त्यौहार एवं पर्व अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हुए समाज में विशेष उत्साह का संचार करते रहे हैं। 'सर्वेः भवन्तुः सुखिनः' का उद्घोष करने वाली त्योहारों की परंपरा हमारे राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। यह हमारे त्योहार मात्र परंपरा ही नहीं हैं अपितु सामाजिक समरसता, संस्कृति और सभ्यता की खोज तथा हमें अपने अतीत से जुड़े रहने का एहसास भी कराते हैं। रक्षाबंधन एक ऐसा ही पर्व है जो श्रावण शुक्ल मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। रक्षाबंधन के त्योहार में राष्ट्र की सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं अतीत से जुड़े रहने का सुखद अहसास है। आत्मीयता एवं रिश्तों की मजबूती से परिपूर्ण यह पर्व भाई-बहन के प्यार एवं स्नेह के साथ-साथ अधिकार एवं कर्त्तव्यों का भी बोध कराता है तथा साथ ही यह पर्व भारतीय धर्म संस्कृति एवं परंपरा का प्रतीक भी है। इस पर्व पर भाई अपनी बहन से अपनी कलाई पर रक्षा सूत्र का धागा बंधवा कर, उसको उपहार देकर उसकी रक्षा एवं सुरक्षा का वचन देते हैं।

रक्षाबंधन को कुछ स्थानों पर राखी का पर्व भी कहा जाता है। भाई बहन के निर्मल स्नेह को अखंड रखने और प्रेरक बल प्रदान करने वाला यह पर्व काल क्रम में हुए अनेक परिवर्तनों के अनुरूप निरंतर परिवर्तनशील रहा है। परन्तु यह कब प्रारंभ हुआ इसके संबंध में कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। यह वैदिक काल से ही प्रचलन में है। सर्वप्रथम इसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। जब असुरों से पराजित होकर सभी देवता अपनी रक्षा के निमित्त देवराज इंद्र के नेतृत्व में गुरु बृहस्पति के पास पहुंचे और देवराज इंद्र ने दुखी होकर बृहस्पति से कहा कि 'देवगुरु अच्छा होगा कि अब मैं अपना जीवन ही समाप्त कर लूं।' गुरु बृहस्पति के निर्देश पर इंद्राणी ने श्रावण पूर्णिमा के दिन इंद्र सहित सभी देवताओं की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा, अंततः इंद्र ने युद्ध में विजय प्राप्त की। पद्मपुराण, स्कंधपुराण और श्रीमद् भागवत में भी वामन अवतार कथा में रक्षाबंधन के प्रसंग का उल्लेख है। राजा बलि ने 100 यज्ञ पूर्ण करने के बाद स्वर्ग पर अपना आधिपत्य करने की चेष्टा की थी जिसको भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर विफल कर दिया था। वर्णन है कि उन्होंने ब्राह्मण वेश में राजा बलि से तीन पग भूमि दान में लेकर आकाश, पाताल और पृथ्वी को तीन पग में नाप लिया था और राजा बलि को रसातल में भेज दिया था, परन्तु राजा बलि ने अपनी भक्ति से भगवान विष्णु को हमेशा अपने पास रहने का वचन ले लिया। विष्णु जी के घर पर न लौटने से परेशान लक्ष्मी जी को नारद जी के बताएं उपाय के अनुसार लक्ष्मी जी ने राजा बलि को भाई बना कर श्रावण मास की पूर्णिमा

के दिन रक्षा सूत्र बांधा और अपने पति को उपहार स्वरूप वापस ले आयीं, तभी से रक्षा सूत्र बांधते समय 'येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चलस।' श्लोक का उच्चारण करते है, जिसका अर्थ है कि जिस रक्षा सूत्र से दानवों के महा पराक्रमी राजा बलि धर्म के बंधन में बंध गए थे अर्थात धर्म में प्रयुक्त किए गए थे, उसी सूत्र से मैं तुम्हें बांधता हूं यानी धर्म के लिए प्रतिबद्ध करता हूं, हे रक्षे तुम स्थिर रहना, स्थिर रहना।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता के सातवें अध्याय के सातवें श्लोक में कहा है कि 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।' अर्थात सूत्र अथवा धागा अविच्छिन्नता का प्रतीक है क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षा सूत्र भी लोगों को जोड़ता है, गीता में कहा गया है कि जब संसार में नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है तब ज्योतिर्लिंगम भगवान शिव, प्रजापति ब्रह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं जिन्हें मंगल कामना करते हुए बहनें भाइयों को बांधती हैं और भगवान शिव उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दुख और पीड़ा से मुक्ति दिलाते हैं। रक्षाबंधन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एक सूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है। बहनें विवाह के बाद ससुराल चली जाती हैं और इस रक्षाबंधन के बहाने प्रतिवर्ष अपने सगे ही नहीं अपितु दूरदराज के रिश्तो के भाइयों तक को उनके घर जाकर रक्षासूत्र बांधती हैं और इस प्रकार से अपने संबंधों का नवीनीकरण करती रहती हैं। इससे दो परिवारों एवं दो कुलों का परस्पर मिलन होता है। प्राचीन काल में युद्ध भूमि में युद्ध करने वाले वीरों की माता, पत्नी, बहन या अन्य कोई रक्षा सूत्र बांधकर व्यक्ति के शुभ के लिए मंगल कामना करती थी। यदि हम देखें तो इंद्र को इंद्राणी ने, अभिमन्यु को कुंती ने, राजा बलि को लक्ष्मी ने रक्षा सूत्र बांधा था। मध्य युग में जब विदेशी आक्रमणों से भारत भूमि के निवासियों को जीवन का भय हो गया, विशेषकर स्त्रियों के शील की रक्षा का प्रश्न खड़ा हुआ तब रक्षाबंधन ने अपना अलग ही रूप धारण कर इनकी रक्षा की। इस

भगवान श्री कृष्ण ने गीता के सातवें अध्याय के सातवें श्लोक में कहा है कि 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।' अर्थात सूत्र अथवा धागा अविच्छिन्नता का प्रतीक है क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है।

काल में रक्षा सूत्र बांधने वाली बहनों की रक्षा के लिए आहुति देने वाले अनगिनत वीरों की बलिदान गाथाओं से इतिहास भरा पड़ा है।

रक्षाबंधन का पर्व हमेशा से ही सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाला रहा है तथा देश काल की परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को इसमें ढालता रहा है। इस पर्व का महत्व सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों में और भी अधिक है। वर्तमान में भी रक्षाबंधन के दिन भारत के प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति सहित सभी उच्च पदस्थ लोग रक्षा सूत्र बांधकर व बंधवाकर समाज एवं देश की रक्षा करने का वचन लेते हैं एवं देते हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी जन-जागरण करते समय रक्षाबंधन के पर्व का सहारा लिया गया था। 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंग-भंग के परिणामस्वरूप वन्देमातरम आंदोलन की गति में तीव्रता आई थी। लॉर्ड कर्जन का विरोध करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर लोगों के साथ यह कहते सड़कों पर उतरे थे- 'सप्त कोटि लोकेर करुण क्रन्दन, सुनेना सुनिल कर्जन्न दुर्जन; ताइ निते प्रतिशोध मनेर मतन करिल, आमि स्वजने राखी बंधन।' प्राचीन काल में भी पुरातन भारतीय परंपरा के अनुसार जो समाज का पथ प्रदर्शक गुरु अर्थात शिक्षक वर्ग होता था वह रक्षा सूत्र के सहारे देश की ज्ञान परंपरा की रक्षा का संकल्प शेष समाज से कराता था। सांस्कृतिक और धार्मिक पुरोहित वर्ग भी रक्षा सूत्र के माध्यम से समाज से रक्षा का संकल्प कराता था। प्रायः हम देखते हैं कि किसी भी अनुष्ठान के पश्चात रक्षा सूत्र के माध्यम से उपस्थित सभी व्यक्तियों को रक्षा का संकल्प कराया जाता है, इस सब का अभिप्राय यही है कि शक्ति संपन्न सामर्थ्यवान वर्ग अपनी क्षमता के अनुसार समाज के श्रेष्ठ मूल्यों का एवं समाज की रक्षा का संकल्प लेता है। इस प्रकार इस पर्व पर जो लोग सक्षम है वह अन्य को विश्वास दिलाते हैं कि वे निर्भर हैं और किसी भी संकट में उनके साथ खड़े रहेंगे।

सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य भी रक्षाबंधन पर्व को बड़े उत्साह एवं धूमधाम से मनाते हैं, यह वर्ष भर में मनाए जाने वाले 6 महत्वपूर्ण उत्सवों (गुरु पूजन, शस्त्र पूजन के रूप में दशहरा, दीपावली, रक्षाबंधन, वर्ष प्रतिपदा एवं मकर संक्रान्ति) में से उनका एक महत्वपूर्ण पर्व होता है। जाति, धर्म, भाषा, धन-संपत्ति, शिक्षा या सामाजिक ऊंच-नीच

का भेद इनके बीच अर्थहीन होता है। रक्षाबंधन का सूत्र इन सारी विभेदकारी विविधताओं के ऊपर एक समानता वाली दृष्टि रखता है, बहुत सी भिन्नताओं के होते हुए भी समरसता का भाव इनके बीच अटूट होता है। इस पर्व के माध्यम से एक रक्षा सूत्र के द्वारा सभी स्वयंसेवक आत्मीय भाव से बंधकर परंपरागत कुरीतियों को दूर कर, एक दूसरे के प्रति प्रेम और समर्पण भाव से परस्पर बंध जाते हैं। रक्षाबंधन पर्व पर स्वयंसेवक परम पवित्र भगवा ध्वज को रक्षा सूत्र बांधकर उस संकल्प का स्मरण करते हैं जिसमें कहा गया है कि 'धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात हम सब मिलकर धर्म की रक्षा करें, समाज में मूल्यों और अपनी श्रेष्ठ परंपराओं का रक्षण करें। धर्म कोई बाहरी वस्तु नहीं है यह हम सब के हृदय में छिपी लोक मंगलकारी भावना एवं व्यवहार का नाम है। ध्वज को रक्षा सूत्र बांधने का अर्थ भी यही है कि हम सब समाज के लिए हितकर परंपरा का अनुसरण करेंगे। रक्षाबंधन पर्व पर स्वयंसेवक समाज के बीच में वंचित एवं उपेक्षित बस्तियों में जाकर उनके बीच बैठकर, उन्हें भी रक्षा सूत्र बांधते एवं बंधवाते हैं और यह संकल्प दोहराते हैं जिसमें भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि 'समानम सर्वभूतेषु।' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा रक्षाबंधन के त्यौहार को सामाजिक समरसता को मजबूत करने एवं सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

रक्षाबंधन सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के साथ-साथ नारी अस्मिता एवं उसकी रक्षा का पर्व भी है। इस दिन महिलाएं सेना एवं सुरक्षा बलों के जवानों को भी राखी बांधकर उनसे देश एवं स्वयं की रक्षा का वचन लेती है। इस दिन हिंदू समाज के सभी लोग बिना भेदभाव के एक दूसरे की कलाई में रक्षा सूत्र बांधकर सामाजिक समरसता का भाव जागृत करते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों, रंगभेद, जातिवाद व भेदभाव दूर करने का संकल्प लेते हैं। रक्षाबंधन पर्व हमारे सामाजिक परिवेश एवं मानवीय रिश्तो का सबल अंग है, इसमें हमारे मानवीय जीवन मूल्य छिपे हैं जो कि राष्ट्र और समाज के कल्याण में सहायक है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि हम सब एक परम पिता की संतान हैं और हम सभी को एक दूसरे के हित में विचार करते हुए राष्ट्र एवं समाज के प्रति समर्पण भाव से एकीकृत रूप में कार्य करना चाहिए, रक्षा सूत्र हमें शब्द, विचार और कर्म में शुद्धता हेतु बोध कराता है। रक्षाबंधन पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि 'हम सब भारत माता की संतान हैं, हम सब एक हैं और इस विशाल समाज के अंग हैं, हमें भेदभाव और छुआछूत जैसी कुरीतियों को समूल नष्ट करना है।' हमें अपने जीवन में उन भगवान श्री राम के आदर्शों को समाहित करना चाहिए जिन्होंने वन में निषादराज का आतिथ्य तो स्वीकार किया ही था साथ ही भीलनी माता शबरी के जूठे बेर भी बड़े चाव से आत्मीयता पूर्वक गृहण किये थे।

भारतीय परंपरा एवं जीवनशैली में विश्वास ही मूल बंधन है और इन्ही बन्धनों के परिपेक्ष्य में रक्षाबंधन पर्व भाषायी एवं क्षेत्रीय सीमाओं को लांघकर परस्पर स्नेह के बंधनों को बांधने वाला त्योहार है, यह मानव से मानव एवं मानव से प्रकृति के संबंधों को उच्चता प्रदान करने वाला तथा राष्ट्रीय अस्मिता को पहचान देने वाला, सामाजिक समरसता का प्रतीक पर्व है। ■

कथन

आप जीवन में कुछ भी बनें, लेकिन अपनी मातृभाषा, अपनी मातृभूमि को आप कभी नहीं भूलिएगा। भारतीयता ही हमारी आइडेंटिटी है, यह विश्व में भारतवासियों की पहचान है।

-द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

भारत की धरती आज एक बड़े परिवर्तन की गवाह बन रही है। इस परिवर्तन की कमान भारत के नागरिकों के पास है, भारत की बहनों-बेटियों के पास है, भारत के युवाओं के पास है।

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमन्त्री

भारत की भावनिक एकता, भारत में सभी विविधताओं का स्वीकार, सम्मान की भावना के मूल में हिन्दू संस्कृति, हिन्दू परम्परा एवं हिन्दू समाज की स्वीकार प्रवृति और सहिष्णुता है।

-डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, आरएसएस

शिक्षा राष्ट्र की चेतना की अद्भुत अभिव्यक्ति है। आधारभूत मूल्य परिवर्तित नहीं होते हैं, नीतियाँ परिवर्तित होती है। देश की सांस्कृतिक परम्परा, इतिहास के बोध, जीवन लक्ष्य, विश्व दृष्टि से नीतियाँ बनती हैं। शिक्षा नीति के निर्धारण करने वाले लोग समय समय पर इन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान के अनुभवों और आवश्यकताओं को देखते हुए नीतियों का निर्धारण करें।

-दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, आरएसएस

विज्ञान और अध्यात्म - पूरक या विपरीत?

अपूर्वा त्यागी
युवा लेखिका

वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान एक वृक्ष की दो अलग-अलग शाखाएं हैं, लेकिन दोनों का अपना अस्तित्व है। जब आप संसार की किसी वस्तु को जानने की जिज्ञासा में यह प्रश्न करते हैं कि 'यह क्या है?' तो, किसी चीज को इस दृष्टिकोण से जानने की उत्सुकता रखना आपको विज्ञान की ओर अग्रसर करता है। और यदि आप ये प्रश्न करते हैं कि 'मैं कौन हूँ?' तो यह दृष्टिकोण आपको आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करता है।

इस देश में लगभग सभी शास्त्र एक प्रश्न से शुरू होते हैं। प्रश्न पूछने की इस परंपरा से विज्ञान का विकास हुआ है, जो अन्वेषण के सिद्धांत पर आधारित है। ज्ञान की प्रगति के लिए पूछताछ की यह भावना आवश्यक है। पश्चिम में कहते हैं तुम पहले विश्वास करो, एक दिन तुम्हें अनुभव भी हो जाएगा। उसमें भी कुछ सत्य है। देखिए, जब आपके पास एक बीज होता है और आप वह बीज बोते हैं तब आप विश्वास करते हैं कि बीज अंकुरित होने जा रहा है और एक दिन वह अंकुरित भी होता है। पश्चिम में आप पहले विश्वास करते हैं और तब एक दिन आपको परिणाम मिलेगा। पूर्व में हम हमेशा कहते हैं कि पहले अनुभव करें और तब आप अपना विश्वास स्वयं सिद्ध कर सकते हैं। यह एक कारण है कि विश्व के पूर्व में विज्ञान और आध्यात्मिकता कभी भी एक दूसरे को खंडित नहीं करते।

'सत्य नास्ति परो धर्म' एक प्राचीन संस्कृत कहावत है जिसका अनुवाद किया जा सकता है 'सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है'। विज्ञान और आध्यात्मिकता दोनों का केंद्र सत्य की खोज और वास्तविकता की आवश्यक प्रकृति को समझना है। विज्ञान का लक्ष्य उन मूलभूत सिद्धांतों को समझना है जो भौतिक ब्रह्मांड के सभी पहलुओं को रेखांकित करते हैं। आध्यात्म अन्य लोगों और हमारे आसपास की दुनिया के साथ हमारे संबंध की गहरी समझ तक पहुंचने की खोज है। विज्ञान हमारे मन को प्रबुद्ध करना चाहता है, जबकि आध्यात्मिकता हमें अधिक दयालु और समझदार दृष्टिकोण की ओर मार्गदर्शित करता है।

हालाँकि कुछ लोग विज्ञान को अपने धर्म और आध्यात्मिकता के प्रति विरोधी या विरोधाभासी मान सकते हैं, लेकिन सच्चाई यह

देश में लगभग सभी शास्त्र एक प्रश्न से शुरू होते हैं। प्रश्न पूछने की इस परंपरा से विज्ञान का विकास हुआ है, जो अन्वेषण के सिद्धांत पर आधारित है। ज्ञान की प्रगति के लिए पूछताछ की यह भावना आवश्यक है।

है कि विशेष सिद्धांतों और हठधर्मिता के प्रति बाध्यकारी लगाव विज्ञान और आध्यात्मिकता की गहरी अनुभूति दोनों के लिए शत्रुतापूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से, विज्ञान अक्सर धर्म के विपरीत दिखाई देता है। फिर भी, आध्यात्मिकता का एक रूप है जो विज्ञान से असहमत नहीं है। इस गहनतम स्तर पर धर्म, विज्ञान और आध्यात्मिकता काफी सामंजस्यपूर्ण और पूरक हैं। हठधर्मिता हमेशा विज्ञान और आध्यात्मिकता दोनों के रास्ते में खड़ी होती है, क्योंकि यह अक्सर सभी सिद्धांतों और सूचनाओं के लिए गलत होती है। विज्ञान और धर्म के बीच ऐतिहासिक संघर्ष इस तथ्य के कारण हैं कि लोग अक्सर धर्म को हठधर्मिता समझने की भूल कर बैठते हैं।

संस्कृत में, 'नेति नेति' एक प्राचीन योगिक परामर्श है 'यह नहीं, यह नहीं', जिसका अर्थ है कि वास्तविकता की अवधारणा हमेशा हमारी अपेक्षाओं से अधिक होती है, चाहे हम कितना भी अच्छा (वैचारिक) जाल डालने का प्रयास करें, वहां हमेशा छोटी मछलियां होती हैं जो इससे बचती हैं। यही कारण है कि ताओ ते चिंग, एक क्लासिक ताओवादी धर्मग्रंथ, ह्यजिस ताओ को बोला जा सकता है, वह सच्चा ताओ नहीं है' कहकर शुरू होता है।

पूर्वी और पश्चिमी रहस्यवाद दोनों में मूर्तिपूजा के प्रचलन के बावजूद, इसके मूल में आस्था का एक बीज है। यह विश्वास वैज्ञानिक दर्शन के केंद्र में भी है, जो मानता है कि हमारी इंद्रियां और बुद्धि विश्वसनीय हैं और वास्तविकता की हमारी समझ को गहरा कर सकती हैं। इसी तरह, पूर्वी दर्शन और पश्चिमी रहस्यमय परम्पराएं इस विश्वास को साझा करती हैं कि हमारे दिल और बुद्धि भरोसेमंद हैं और स्वयं की गहरी समझ पैदा कर सकते हैं। अगर हम अपनी इंद्रियों, हृदय और बुद्धि पर भरोसा नहीं कर सकते हैं, तो हम किस पर भरोसा कर सकते हैं?

भविष्य में विज्ञान हृदय और करुणा पर आधारित होगा और यह विश्व का धर्म बन जाएगा। यह जानने के लिए कि जो हमारे लिए अभेद्य है वह वास्तव में अस्तित्व में है, जो स्वयं को उच्चतम ज्ञान और सबसे उज्ज्वल सुंदरता के रूप में प्रकट करता है, जिसे हमारे सुस्त संकाय केवल अपने आदिम रूपों में ही समझ सकते हैं - यह ज्ञान, यह भावना, सच्चे धर्म के केंद्र में है, और यही विज्ञान का आधार भी है। विज्ञान हमारी आध्यात्मिक अनुभूतियों को परिष्कृत और स्पष्ट करता है, वैसे ही जैसे हमारे आध्यात्मिक उपसंहार विज्ञान के विकास को प्रेरित करते हैं। ■

सबल भारत का परिचय 'आत्मनिर्भरता'

नेहा कक्कड़
सचिव, हियर द साइलेंस संस्था

हाल के वर्षों में एक प्रमुख नीतिगत पहल और दृष्टिकोण के रूप में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को मजबूत किया जा रहा है। मई 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 20 लाख करोड़ रुपए के इस कार्यक्रम को आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज के साथ शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी हासिल करने हेतु सुरक्षा अनुपालन और वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार करते हुए आयात निर्भरता को कम कर, आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त करना था।

भारत को कृषि, रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी सहित कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारत सरकार ने 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी पहल की, इसका प्रमुख लक्ष्य घरेलू स्टार्ट-अप का पोषण और समर्थन कर उन्हें देश की आत्मनिर्भरता में योगदान करने और योगदान करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा, वित्त पोषण और नीतिगत समर्थन प्रदान करना है। इस योजना के शुभारम्भ से लेकर अब तक 92000 से अधिक संस्थाओं को स्टार्टअप के रूप में मान्यता प्राप्त होने के साथ साथ 3 साल के लिए आयकर में छूट भी प्रदान की गई, परिणामस्वरुप पूरे देश में उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा मिला।

> भारत को कृषि, रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी सहित कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारत सरकार ने 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी पहल की, इसका प्रमुख लक्ष्य घरेलू स्टार्ट-अप का पोषण और समर्थन कर उन्हें देश की आत्मनिर्भरता में योगदान करने और योगदान करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा, वित्त पोषण और नीतिगत समर्थन प्रदान करना है। इस योजना के शुभारम्भ से लेकर अब तक 92000 से अधिक संस्थाओं को स्टार्टअप के रूप में मान्यता प्राप्त होने के साथ साथ 3 साल के लिए आयकर में छूट भी प्रदान की गई परिणामस्वरुप पूरे देश में उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा मिला।

भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत की नीव को मजबूत करने के लिए देशवासियों विशेषकर युवाओं और घरेलू महिलाओं में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना और दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना व्यावसायिक प्रशिक्षण और उद्यमिता शिक्षा पर भी जोर दिया है। आज 877 से अधिक पीआईए ग्रामीण युवाओं को 2,369 प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से 616 रोजगार भूमिकाओं के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं।

डिजिटल इंडिया की बात करें तो आत्मनिर्भरता लाने के लिए प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर, किफायती डिजिटल सेवाएं प्रदान करना, और पूरे देश में डिजिटल साक्षरता और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने हेतु सरकार ने सरकारी टेलिकॉम कंपनी बीएसएनएल (BSNL) के रिवाइवल के लिए कंपनी को 89,047 करोड़ रुपये का तीसरा रिवाइवल पैकेज देने के साथ ही 4जी और 5जी स्पेक्ट्रम के आवंटन को भी मंजूरी देकर इन सेवाओं को मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। वर्तमान भारत ने जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर महत्वपूर्ण जोर दिया है। सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के विकास और अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न नीतियों और प्रोत्साहनों को लागू किया है। ये सभी प्रयास विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता लाकर घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने और स्वयं को वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की आज नए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

आज महिलाएं अर्थव्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति और उद्यमिता सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्धि तक लाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय महिलाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण और बहुआयामी बनाने के लिए देश की आधी आबादी (महिला शक्ति) को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने को प्राथमिकता दी है।

आज आर्थिक सशक्तिकरण की ओर ध्यान दिया जाये तो आज महिलाएँ कुल 321 महिला-ए-हाट में पंजीकृत हो,उद्यमियों के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं 'स्टैंड अप इंडिया' के अंतर्गत 10 लाख से 01 करोड़ के बैंक ऋण की सुविधा के साथ अपने हुनर को आधार दे कर कृषि, विनिर्माण, सेवा और लघु उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों में औपचारिक कार्यबल

के रूप में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। कभी ऐसा समय भी हुआ करता था जब बैंकिंग महिलाओं के लिए सरल न थी, लेकिन आज भारतीय महिलाएं केंद्र सरकार की दूरदर्शी नीतियों के कारण उद्यमिता और नवाचार में सभी बाधाओं को तोड़ उद्यमियों और नवप्रवर्तकों के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सफल स्टार्टअप स्थापित कर रही हैं।

यदि ग्रामीण क्षेत्र की 'सेल्फ हेल्प ग्रुप' की महिलाओं की बात करूँ तो आत्मनिर्भर भारत की तर्ज पर किस प्रकार लखपति दीदीओं के निर्माण को बल दिया गया है एक छोटे से उदाहरण द्वारा मैं स्वयं का अनुभव साझा कर रही हूँ जब हाल ही में दमोह (मध्यप्रदेश) प्रवास के दौरान घूँघट में बैठी दीदीओं के आत्मविश्वास को उनके कहे इन शब्दों में महसूस किया कि, 'सिलाई का काम सिखाया सरकार ने, फिर पहले 2 लाख का लोन लेकर काम किया और लाभ के साथ कर्जा चुका दिया, फिर और काम बढ़ाया अब और लोन लेंगे और काम करेंगे। ये स्थिति दर्शाती है कि भारत न केवल आत्मनिर्भर हो रहा है बल्कि समाज की अंतिम इकाई को भी मजबूत कर रहा है।

एक दौर वो भी था जब शिक्षा और कौशल विकास का रास्ता महिलाओं के लिए उतना आसान नहीं था, पर आज आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण के लिए भारतीय महिलाएं उच्च स्तर तक सक्रिय रूप से शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) जैसे विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। आज भारतीय महिलाएं पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देकर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की ओर सक्रियता से काम कर रही है 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की ओर समाज की सक्रियता और सरकार द्वारा मिली प्राथमिकता, लैंगिक समानता, महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक न्याय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो नए भारत में देश की आधी आबादी के लिए सामाजिक परिवर्तन की ओर संकेत करता हैं। महिलाएं अक्सर सतत विकास में सबसे आगे होती हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। वे कृषि पद्धतियों, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और संरक्षण प्रयासों में योगदान देती हैं। पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भर और लचीला भविष्य सुनिश्चित करने के लिए सतत विकास में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की ओर समाज की सक्रियता और सरकार द्वारा मिली प्राथमिकता, लैंगिक समानता, महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक न्याय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो नए भारत में देश की आधी आबादी के लिए सामाजिक परिवर्तन की ओर संकेत करता हैं।

देश के भविष्य को आकार देने में भारतीय महिलाओं की अपार क्षमता और प्रतिभा विद्यमान है। इस बात को भली भांति जानते हुए ही आज केंद्र सरकार महिला सशक्तिकरण से आत्मनिर्भरता की कड़ी को वित्तीय वर्ष 2024 के बजट में शुरू हुई वित्तीय सुरक्षा महिला सम्मान बचत प्रमाणपत्र और विभिन्न योजनाओं द्वारा निरंतर मजबूत नीव प्रदान कर रहा है।

आज हमारा देश हर रूप में कुशल, कौशल और आत्मनिर्भर होकर समृद्धि का लक्ष्य तय करने का प्रयास रहा है क्योंकि जैसा आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा 'आत्मनिर्भर भारत मात्र शब्द नहीं, सभी भारतीयों के लिए मंत्र बन गया है' और ये मंत्र आज देश को सभी दिशा में आगे बढ़ाने का कार्य अनवरत कर रहा हैं। ■

साइबर क्राइम से सावधान!

साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट एडवोकेट अनुज अग्रवाल का साइबर क्राइम पर विशेष साक्षात्कार...

पल्लवी सिंह

मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता तेज गति से बढ़ रही है। सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डेटा स्टोर करना, गेमिंग, ऑनलाइन स्टडी, ऑनलाइन जॉब इत्यादि आज सभी कुछ इंटरनेट के माध्यम से हो रहा है। इंटरनेट के विकास के साथ ही इससे संबंधित साइबर ठगी भी बढ़ रही है। आज एक क्लिक से ही चंद मिनटों में आपके पैसे ठगे जा सकते हैं। इंटरनेट के उपयोग से आपकी फोटो को मॉर्फ कर आपको आपत्तिजनक स्थिति में भी डाला जा सकता है। इंटरनेट से संबंधित लाभों के साथ ही साइबर अपराधों की अवधारणा भी विकसित हुई है। साइबर क्राइम विषय पर एडवोकेट अनुज अग्रवाल से जानिए साइबर क्राइम से बचने के लिए विशेष सावधानियां

1. **आज हम ऑनलाइन पेमेंट में इतने एक्सपर्ट हो गए हैं कि हमें लगता है हमारे साथ साइबर ठगी नहीं हो सकती, क्या आप इससे सहमत हैं?**

   विश्व में दो प्रकार के लोग हैं, एक वे जो साइबर क्राइम के शिकार हो चुके हैं, अन्य वे जो मानते हैं कि उनके साथ साइबर ठगी नहीं हो सकती। अगर आप सुरक्षा के कुछ बिन्दु ध्यान में रखें और सतर्क रहें तो निश्चित ही आप साइबर ठगी से बच सकते हैं। जैसे हाईवे पर आप सावधानी बरतने से एक्सीडेंट से बच सकते हैं उसी प्रकार इंटरनेट भी एक इनफार्मेशन हाईवे है। इस हाईवे पर भी यदि हम कुछ मूल नियमों का पालन करें तो हमारे साथ साइबर क्राइम नहीं होगा। साइबर क्राइम रोका जा सकता है, उससे बचा जा सकता है।

2. **आज सभी के पास मोबाइल फोन हैं जिनमें ढेरों एप्स बैंक अकाउंट्स से लिंक्ड हैं। फोन यूजर्स को किस बात का ध्यान रखना चाहिए?**

   जब फोन के माध्यम से बैंकिंग लेन देन कर रहे हैं तो उन एप्लिकेशन्स (एप्स) से बचें जो पूर्णतः सुरक्षित एवं विश्वसनीय नहीं हैं। वाट्सएप या अन्य स्रोतों से प्रायः ऐसे लिंक भेजे जाते हैं जिनमें बहुत लुभावने ऑफर होते हैं। ऐसे लिंक अपराधियों द्वारा भेजे हुए हो सकते हैं जिनसे आपका पर्सनल डेटा आसानी से चोरी किया जा सके। अपने OTP को किसी से साझा मत कीजिए।

3. **शॉपिंग के दौरान कार्ड स्वाइप करने से या QRकोड स्कैन करने से भी साइबर ठगी का खतरा है?**

   भारत में सभी स्थानों बैंक संबंधी लेन देन OTP (ओटीपी) के माध्यम से होता है। भारत में OTP की विशेष सुविधा है, दुनियाँ के हर देश में इस प्रकार की सुविधा नहीं है। हमारे देश में RBI(रिजर्व बेंक ऑफ इंडिया) ने इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल ट्रांजैक्शन को बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने के लिए ही OTP की सुविधा दी है। हमें अपने OTP को सुरक्षित रखना है और अपना कार्ड किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देना जहां उसका क्लोन (डुप्लिकेट) बनाया जा सके। रेस्टोरेंट और पेट्रोल पम्प जैसे स्थानों पर अपने कार्ड का पिन स्वयं डालें।

4. **सोशल मीडिया साइबर क्राइम क्या है?**

   सोशल मीडिया का उद्देश्य है लोगों तक अपनी बात पहुंचाना। इसकी विशेषता है कि इस पर किसी प्रकार का नियंत्रण, बैरियर नहीं है और इसमें anonymity और confidentiality यानि प्राइवसी (गोपनीयता) भी रखी जा सकती है लेकिन इसी का दुरुपयोग कर आपसे आपराधिक तत्व भी जुड़ सकते हैं। जो आपके साझा किए समाचारों, विडियो और फोटो का दुरुपयोग करते हुए आपराधिक कृत्य कर बैठते हैं। फोटो से छेड़छाड़ कर गलत वेबसाइट पर डाल देना, लोगों की बैंकिंग जानकारी का दुरुपयोग करना, दुष्प्रचार करना और फिर ब्लैकमेल कर पैसे मांगने के लिए भी सोशल मीडिया का दुरुपयोग किया जाता है। इस परकार की गतिविधियों को सोशल साइबर क्राइम कहते हैं।

5. **आज महिलाएं, बच्चे, युवा सोशल मीडिया पर हैं, Cyber bully क्या है? इससे सुरक्षित कैसे रह सकते हैं?**

   हम सभी ने देखा है कि विद्यालयों, गली-मुहल्लों में कुछ शरारती बच्चे अन्य बच्चों को धमकाते, चिढ़ाते और डराते हैं, जिसे हम अक्सर बुली कहते हैं, इसी प्रकार जब लोग सोशल मीडिया पर इस प्रकार के कृत्य करते है तो इसे साइबर बुली कहा जाता है। सोशल मीडिया पर लोग फैन फॉलोइंग कम करने, Like (लाइक) कम होने को लेकर भी एक दूसरे को धमकाते है, हीन महसूस कराते हैं, यह भी बुली करना है। ट्रोलिंग भी साइबर बुलिंग का एक तरीका हो सकता है। इससे बदनामी हो सकती और व्यक्ति अवसाद का शिकार भी हो सकते हैं।

6. **क्या यात्रा के दौरान फेसबुक या अन्य किसी मीडिया पर लोकेशन टैग करना खतरनाक हो सकता है?**

   प्रायः लोग फेसबुक पर यह जानकारी

पल्लवी सिंह द्वारा लिया अनुज अग्रवाल जी का साक्षात्कार

डाल देते हैं कि वे कहाँ है और कितने दिनों के लिए यात्रा पर जा रहे हैं। यदि कोई आपराधिक मानसिकता का व्यक्ति किसी अप्रिय घटना को अंजाम देने के उद्देश्य से आप पर नजर रख रहा है तो इस प्रकार की जानकारी उसका काम बहुत आसान कर देती है। निजी जानकारी मिलने पर अपराधी आपका पीछा कर सकता है, चोरी या किसी और प्रकार से आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

सोशल मीडिया पर निजी जानकारी, फोटो, आने- जाने की तिथि या बैंकिंग संबंधी कोई पोस्ट करते समय सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि आपकी फ्रेंडलिस्ट में बहुत ही कम लोग होते हैं जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से मिले होते हैं। अंतरंग जानकारी साझा करने से पहले अवश्य सोचें।

7. **वॉट्सएप के माध्यम से अनजान नंबर से वीडियो कॉल्स आना, ग्रहणियों के नंबर पर वर्क फ्रॉम होम जैसे मैसेज आना? क्या यह साइबर क्राइम की चाल है?**

ये दोनों जालसाजी के बड़े षड्यन्त्र हैं। सेक्सटॉर्शन का बड़ा रैकेट देश में चल रहा है। जिसमें अनजान नंबर से वीडियो कॉल आती है, दूसरे लिंग का व्यक्ति कुछ अजीबो-गरीब नग्न अश्लील हरकतें करता है और इस विडिओ कॉल की रिकॉर्डिंग कर लेता है। फिर वे आपराधिक तत्व आपको ब्लेकमेल करते हैं, सोशल मीडिया पर आपकी वीडियो कॉल वाइरल करने की धमकी देते हैं और पैसे मांगते हैं। यहां तक कि पुलिस में रिपोर्ट लिखाने तक की धमकी दे देते हैं। इससे बचने का आसान तरीका यही है कि आप कभी भी अनजान नंबर की वीडियो कॉल नहीं उठाएं। यदि बात करनी है तो नॉर्मल कॉल मिलाएं।

8. **साइबर ठगी होने पर पहला कदम क्या उठाएं? किन संगठनों को सूचित किया जाना चाहिए?**

जैसे ही आपके साथ साइबर ठगी होती है आपको नैशनल साइबर फाइनैन्शल फ्रॉड हेल्पलाइन रेपोर्टिंग नंबर 1930 पर संपर्क करना है। साइबर ठगी द्वारा आर्थिक नुकसान होने पर तुरंत इस नंबर पर सूचना दें। इसके अतिरक्त https://cybercrime.gov.in/ पर भी आप विस्तार में अपनी रिपोर्ट लिखवा सकते हैं। सभी थानों में साइबर अपराध से संबंधी शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। विभिन्न प्रदेशों में साइबर थाने भी बनाए गए हैं, वहीं अधिकतर प्रदेशों के थानों में साइबर डेस्क बन चुके हैं। दुर्घटना या ठगी की स्थिति में तुरंत अपने बैंक को सूचित करें और कार्ड इत्यादि को ब्लॉक करा दें। बैंक की हेल्पलाइन पर सूचित करें कि अभी के लिए आपके खाते से अभी कोई भी लेन-देन (ट्रैन्सैक्शन) रोक दे। इससे आपका समय और पैसा बच सकता है क्योंकि आपकी शिकायत मिलते ही पुलिस भी पहले बेंक को ही संपर्क करती है।

9. **यदि साइबर ठगी के दौरान व्यक्ति किसी और राज्य में है तो शिकायत कहाँ दर्ज करानी होगी?**

यदि आप कहीं घूमने गए हैं और वहाँ साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो बिना समय गँवाए उसी राज्य के निकटतम थाने में शिकायत दर्ज करा सकते हैं। साइबर ठगी का मामला आप देश के किसी भी राज्य के पुलिस थाने में दर्ज कर सकते हैं।

साथ ही पूर्व में बताई गई वेबसाईट ओर फोन नंबर पर भी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

10. **ऐसी कौन सी सांकेतिक चेतावनी है जिससे किसी व्यक्ति को पता चल सके कि वह साइबर अपराधियों की**

गतिविधियों का लक्ष्य हो सकता है?

प्रायः हमें ऐसी चेतावनियाँ मिलती हैं लेकिन हम उनको गंभीरता से नहीं लेते अपितु उन्हें नजरअंदाज कर देते हैं क्योंकि हम मानते हैं कि हमारे साथ साइबर ठगी नहीं होगी। साइबर अपराधी डरा कर या लालच देकर आपको अपने जाल में फंसाते हैं। उदाहरण के लिए - यदि आपको कोई मेसेज आता है कि आपने बिजली का बिल नहीं भरा है, लिंक को क्लिक करें नहीं तो कनेक्शन काट दिया जाएगा। ऐसे में किसी भी लिंक को क्लिक नहीं करना चाहिए, विचार करें कि क्या सच में आपने बिल नहीं जमा किया है और यदि कोई समस्या है तो आधिकारिक वेबसाईट पर जाएं या विभाग को संपर्क करें। इसी प्रकार कई बार लुभावने ऑफर वाले मेसेज आते हैं, मुफ्त चीज मिल रही होती है इस प्रकार के लिंक से सावधान रहें।

11. कैसे कोई संस्था साइबर क्राइम का शिकार हो सकती है? कैसे अपने कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करें?

देश के दुश्मन हमारे क्रिटिकल सिस्टम (महत्वपूर्ण तंत्र) जैसे बैंकिंग, इंटरनेट, संपर्क तंत्र, विद्युत तंत्र आदि को नष्ट करने के लिए एवं उनमें अवरोध उत्पन्न करने के लिए आक्रमण करते हैं। मुंबई में ग्रिड फेल होने से लंबे समय के लिए बिजली गई, इसे साइबर अटेक का ही उदाहरण माना जा रहा है।

रैनसमवेयर एक बहुत बड़ा साइबर अपराध सामने आया है जो संस्थान के कंप्यूटर को जकड़ लेता है और डेटा को इन्क्रिप्ट (encrypt) कर देता है फिर संस्थान से फिरौती के रूप में एक एक बड़ी रकम मांगी जाती है।

संस्थान भी लोगों से ही बनता है, इसीलिए किसी एक कर्मचारी की असावधानी का नुकसान पूरे संस्थान को उठाना पड़ सकता है। संस्थान को सुरक्षा तंत्र विकसित करना चाहिए और कर्मचारियों को जागरूक बनाने के लिए प्रशिक्षण दिलाना चाहिए।

अधिकतर अच्छे संस्थानों में सुरक्षा की दृष्टि से कार्यालय के कंप्यूटर में इस प्रकार की व्यवस्था होती है कि कार्यालय संबंधी लिंक के अतिरिक्त कोई भी अनावश्यक लिंक उनके कंप्यूटर में नहीं खुलें।

12. क्या साइबर ठगी राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हो सकती है?

ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गैंग बना कर साइबर ठगी की गई हैं। कई बैंकों को ऐसे लूटा गया है, जहां पैसे की निकासी एक ही समय पर अलग अलग देशों में हुई है। साइबर ठगी के मामलों में किसी देश की भौतिक सीमाओं का कोई अर्थ नहीं होता है। यदि आप विदेश यात्रा पर नहीं जा रहे

हैं तो अपने डेबिट कार्ड आदि की अंतर्राष्ट्रीय सुविधाओं को बंद करा दें।

13. नोएडा में साइबर क्राइम की क्या स्थिति है?

नोएडा में साइबर क्राइम की समस्या गंभीर है जिनमें फाइनैन्शल साइबर क्राइम के मामले अधिक हैं। इस क्षेत्र में हाल के कई मामलों को देखें तो साइबर माध्यम से करोड़ों की ठगी हुई है। इसके अतिरिक्त सोशल साइबर क्राइम में साइबर बुलिंग के मामले भी हैं क्योंकि नोएडा सम्पन्न क्षेत्र है, यहाँ स्कूली बच्चों के पास भी फोन है और वे सोशल मीडिया पर भी एक्टिव हैं।

सुखद समाचार यह है कि नोएडा में साइबर क्राइम को रोकने के लिए साइबर थाना भी है कमिशनरेट में साइबर सेल भी है जहां पुलिस अधिकारी साइबर क्राइम संबंधी मामलों की जांच पड़ताल करने के लिए तत्पर रहते हैं।

14. क्या आप कोई वास्तविक उदाहरण साझा कर सकते हैं जहां साइबरक्राइम को सफलतापूर्वक कम किया गया हो? क्या साइबर क्राइम से गया पैसा वापस आ सकता है?

ऐसे अनेकों मामले हैं जहां पर समय पर सूचना मिलने पर जांच पड़ताल की गई। पुलिस एवं साइबर एक्सपर्ट्स के हस्तक्षेप से सफलतापूर्वक पूरी धनराशि पड़ित को वापस दिलवाई गई है और अपराधी को गिरफ्तार भी किया गया है। कई ऐसे भी मामले हैं जहां विभिन्न राज्यों में घटना हुई, केस दर्ज भी हुए लेकिन उन अपराधियों को पकड़ने में सहयोग नोएडा पुलिस ने ही किया। एक अंतर्राज्यीय गिरोह के व्यक्ति ने कई राज्यों के डॉक्टरों के साथ ठगी को अंजाम दिया, अंतोतगत्वा नोएडा पुलिस ने ही उस अपराधी को पकड़ा और जेल में डाला गया और उसके विरुद्ध सख्त कानूनी कार्यवाई चल रही है। नोएडा का साइबर थाना बहुत सक्रिय है और विभिन्न जटिल मामलों को सुलझाया है और उनमें सफलता प्राप्त की है।

15. गूगल से लिए गए कस्टमर केयर नंबर से ठगी संभव है?

गूगल से कस्टमर केयर नंबर ना लें। आप कम्पनी की आधिकारिक वेबसाईट पर दिए गए नंबरों पर ही संपर्क करें। ऐसा देखा गया है कि गूगल पर अधिकांश लिस्टिंग या तो फेक हैं या साइबर अपराधियों की हैं।

16. प्रायः साइबर बुली जैसे मामलों में लोग पहचान उजागर हो जाने के डर से शिकायत दर्ज कराने से बचते हैं, क्या इसके लिए कोई प्रावधान है?

महिलाओं और बच्चों के प्रति किए गए यौन शोषण जैसे अपराधों में पहचान छिपाकर रखने का प्रावधान है। उनके नाम को गोपनीय रखा जाता है। कुछ विशेष मामलों में इन कैमरा प्रोसीडिंग की छूट भी दी जाती है। यह प्रावधान पहले से हैं जो साइबर क्राइम में भी लागू है। ■

चैट जीपीटी : नवीनतम टेक्नोलॉजी पर आधारित उपयोगिता

मोनिका चौहान
शिक्षिका एवं स्वतंत्र टिप्पणीकार

चैट जीपीटी आज के समय का सबसे चर्चित विषय है। आज हर जगह लोग चैट जीपीटी के बारे में चर्चा कर रहे हैं। आखिर चैट जीपीटी क्या है और यह मानव जीवन को किस तरह से प्रभावित कर रहा है? या यह कह सकते हैं कि भविष्य में इसके मानव जीवन पर क्या-क्या प्रभाव होंगे?

चैट जीपीटी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक चैट बोट है। चैट जीपीटी एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां पर आप कुछ भी सवाल पूछते हैं, तो उसका जवाब आपको लिख कर दिया जाता है। चैट जीपीटी के पास अपना खुद का मशीनी दिमाग है और उसी कृत्रिम बुद्धि से सोच समझकर यह आपके सवालों का जवाब देता है। यह ओपन एआई द्वारा विकसित किया गया है। ओपन एआई एक कंपनी है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काम करती है। सैम अल्टमैन इस कंपनी के सीईओ हैं जिन्होंने इस तकनीक को विकसित किया है। चैट जीपीटी की संरचना जीपीटी 3.5 पर आधारित है। जीपीटी का अर्थ है चैट जेनरेटिव प्री -ट्रेंड ट्रांसफार्मर (Generative Pre-Trained Transformer)। जिसे हम 'सृजनात्मक पूर्व प्रशिक्षित संवादक' भी कहते हैं। यह प्रणाली विभिन्न भाषाओं में मानव के साथ संवाद कर सकती है।

वर्तमान समय में चैट जीपीटी का उपयोग बढ़ता जा रहा है। चैट जीपीटी को ओपन एआई कंपनी ने नवंबर 2022 में लांच किया था। यह भाषा समझने, शब्दावली बनाने और मानव के साथ बातचीत करने की क्षमता को विकसित करने के लिए उद्धृत किया गया है। इसका उपयोग अनेकों उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है जैसे कि प्रश्न का उत्तर प्रदान करना, संदेशों का संपादन करना, अनुवाद करना, सवाल जवाब देना, सामान्य ज्ञान प्रदान करना आदि। इसकी सहायता से पत्र लिखना,

ब्लॉग लिखना, कविता लिखना आदि बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। एआई का यह टूल सारी जानकारी नेट पर उपलब्ध लाखों वेबसाइट, संदर्भ पुस्तकों, विकिपीडिया आदि के डाटा से एकत्र करके देता है। अर्थात खोजी हुई इंफॉर्मेशन को संक्षिप्त व उत्तम शब्दों में आपके सामने रख देता है।

चैट जीपीटी अपने यूजर्स के प्रश्नों के उत्तर लिंक या सोर्स के रूप में नहीं देता जैसा आमतौर पर सर्च इंजन द्वारा दिया जाता है। बल्कि यह आपके सवालों के जवाब सीधा टेक्स्ट फॉर्मेट में प्रस्तुत करता है। अगर आप इसके किसी उत्तर से संतुष्ट नहीं हैं तो यह आपके सुझाव लेता है और आपके द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार अपने उत्तर या परिणाम में संशोधन करता है। आप चैट जीपीटी के माध्यम से स्क्रिप्ट लेखन, कंटेंट राइटिंग जैसे काम भी आसानी से कर सकते हैं। चैट जीपीटी का नया वर्जन 4.0 में आप केवल टेक्स्ट नहीं बल्कि इमेज को भी इनपुट के तौर पर दे सकते हैं। चैट जीपीटी का सबसे ज्यादा इस्तेमाल कंटेंट राइटिंग के लिए किया जा सकता है। आप जिस भी कीवर्ड पर कंटेंट लिखना चाह रहे हैं उससे संबंधित क्वेरी को चैट जीपीटी मे लिखकर सर्च करें। इसके बाद चैट जीपीटी एआई की मदद से कंटेंट को लिखने लग जाएगा इसमें आपको 500 शब्द या इससे अधिक के कंटेंट भी मिल सकते है।

चैट जीपीटी के अनेकों फायदे हैं तो उसके कुछ नुकसान भी हैं। चैट जीपीटी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर आधारित एक चैट बोट है जो पब्लिक डाटा को सोर्स के तौर पर इस्तेमाल करके आपके सवालों के जवाब देता है। इसके द्वारा दिये गये सवालों के जवाब सही ही हो ये आवश्यक नहीं है। इसलिए इसकी विश्वसनीयता पर संदेह बना हुआ है। चैट जीपीटी आपके संदेशों, डेटा और निजी जानकारी को संग्रहित कर सकता है, जिसे अनुचित रूप से उपयोग किया जा सकता है या नियंत्रण से बाहर जाने का खतरा हो सकता है। चैट जीपीटी द्वारा प्रदान की जाने वाली सलाह या सुझाव संबंधित क्षेत्र की अधिकृत प्रोफेशनल सलाहकारों की जगह नहीं ले सकती है, और यह कई क्षेत्रों में कानूनी या नियमित नियमों के बाहर जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि चैट जीपीटी के आने से कई सारे लोग बेरोजगार हो जायेंगे, लेकिन क्रिएटिव कंटेंट जनरेट करने में चैट जीपीटी कितना कारगर होता है यह तो वक्त ही बताएगा। इस तरह, चैट जीपीटी के फायदे और नुकसान विचारशीलता, संवादिता और तकनीकी प्रगति के साथ आते हैं। लेकिन इसकी सीमाएं और निर्देशों के बारे में सतर्क रहना आवश्यक है। ■

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

- जापान में गूंजा हर-हर महादेव, शिव भक्तों ने निकाली 82 KM लंबी कांवड़ यात्रा
- पाकिस्तान के सिंध में मंदिरों की सुरक्षा का जिम्मा 400 सुरक्षाकर्मियों को सौंपा गया, मंदिर रहेंगे 400 सुरक्षाकर्मियों के घेरे में, हिंदुओं में बढ़ते आक्रोश के बाद उठाया यह कदम
- 105 ऐतिहासिक कलाकृतियां वापस करेगा अमेरिका, भगवान बुद्ध की सुंदर प्रतिमा के साथ ही वैदिक काल के हिंदू मंदिरों की भी कई कलाकृतियां वापस लौटाई जाएंगी
- यूएई के साथ 100 अरब डॉलर तक पहुंचेगा व्यापार, आईआईटी दिल्ली का खुलेगा कैम्पस, भारतीय प्रधानमंत्री का भव्य स्वागत कर यूएई के राष्ट्रपति ने हिन्दी में किया ट्वीट
- फ्रांस के वार्षिक उत्सव 'बैस्टिल डे' पर आयोजित परेड में पीएम मोदी के सामने भारतीय देश भक्ति गीत भी गूंजा। फ्रांस की सेनाओं के साथ भारतीय सेना के तीनों बलों ने अपने शौर्य का किया प्रदर्शन

- भारत द्वारा दिये गए 5 करोड रुपए के अनुदान से निर्मित बुधनील कंठ धर्मशाला का काठमांडू घाटी में नेपाल के उपराष्ट्रपति राम सहाय प्रसाद यादव ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने भूकंप के बाद पुनः निर्माण कार्यों के लिए भारत के सहयोग की सराहना की।
- पीएम मोदी को फ्रांस का सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड क्रॉस, ये सम्मान प्राप्त करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री, यह सैन्य या नागरिक श्रेणी में सर्वोच्च फ्रांसीसी सम्मान है
- 'अरुणाचल है भारत का अभिन्न अंग', अमेरिका की सीनेट कमेटी में पारित हुआ प्रस्ताव
- राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी ने पीएम मोदी को मिस्र के सर्वोच्च सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द नाइल' से सम्मानित किया
- रूस के राष्ट्रपति पुतिन बोले, 'पीएम मोदी एक शानदार दोस्त, मेक इन इंडिया से भारत की अर्थव्यवस्था हुई मजबूत'
- पाकिस्तान में हिंदू मंदिर पर रॉकेट लॉन्चर से हमला, हिंदुओं के घरों पर अंधाधुंध फायरिंग, 30 लोगों को बंधक बनाने की सूचना

विशेष समाचार

- 25 जून सीएम योगी ने नोएडा और ग्रेटर नोएडा को दी 1719 करोड़ की 124 परियोजनाओं की सौगात, पर्थला चौक फ्लाईओवर का भी लोकार्पण किया
- 26 जून महाकाल मंदिर के गर्भगृह में 4 जुलाई से 11 सितंबर तक बंद रहेगा श्रद्धालुओं का प्रवेश
- 27 जून मंदिरों में मर्यादित वस्त्रों को लेकर लगे बोर्ड, वैकल्पिक वस्त्रों की भी है व्यवस्था, मेरठ में शक्ति पीठ, गाजियाबाद में श्री हनुमान मंदिर, ऋषिकेश में नीलकंठ महादेव मंदिर, मनसा देवी, हनुमान मंदिर शामली सहित कई मंदिरों में लगे बोर्ड
- 28 जून मध्य प्रदेश में स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल होगी वीर सावरकर की जीवनी,

एमपी के स्कूल शिक्षा राज्यमंत्री की घोषणा, बच्चे महान क्रांतिकारियों भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के बारे में भी पढ़ेंगे

- 29 जून दिल्ली औरंगजेब लेन का नाम बदलकर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम लेन किया गया

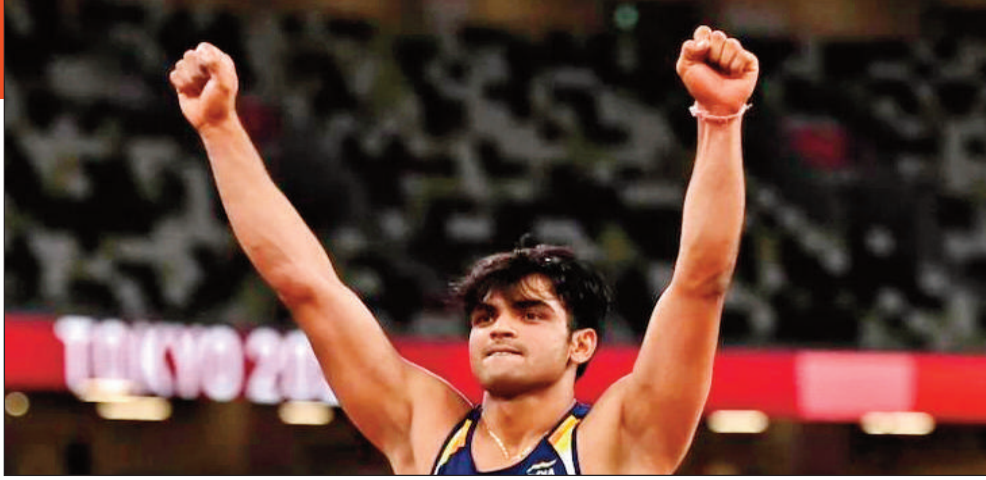

- 30 जून सावन में ढाई करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद, बाबा विश्वनाथ के भक्तों की सुरक्षा करेंगे एटीएस के कमांडो, गोदौलिया से मैदागिन तक बने पांच जोन
- 1 जुलाई एथलीट नीरज चोपड़ा ने फिर रचा इतिहास, चोट के बाद की शानदार वापसी, लुसाने डायमंड लीग में जीता गोल्ड
- 2 जुलाई इसरो के 'मिशन गगनयान' की क्रू रिकवरी टीम को नौसेना ने दिया पहला प्रशिक्षण
- 3 जुलाई श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को सौंपा जाएगा अयोध्या में स्थित अन्तरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय, संग्रहालय में प्रभु श्रीराम से जुड़ी हुई पुरातात्विक महत्व की वस्तुएं अभी भी सुरक्षित
- 4 जुलाई अश्विनी वैष्णव ने लॉन्च किया 6 जी अलायंस, भारत अब दूरसंचार प्रौद्योगिकियों का निर्यातक बना
- 5 जुलाई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने नागपुर में भारतीय विद्या भवन के सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी अपने जन्मस्थान से दूर रहकर भी अपनी जन्मभूमि और संस्कृति से जुड़ी हुई है
- 6 जुलाई उत्तराखंड स्थित हरिद्वार में कांवड़ियों का भव्य स्वागत, शिव भक्तों पर हेलीकॉप्टर से की गई पुष्प वर्षा
- 7 जुलाई दिल्लीः लाजपत नगर बम ब्लास्ट में आया सुप्रीम कोर्ट का फैसला, 4 दोषियों को उम्रकैद, 27 साल पहले ली थी 13 लोगों की जान

मोदी सरनेम मानहानि केसः गुजरात हाई कोर्ट से राहुल गांधी को झटका, पुनर्विचार याचिका हुई खारिज, गुजरात हाई कोर्ट ने सूरत कोर्ट का फैसला बरकरार रखा

- 8 जुलाई पीएम मोदी ने राजस्थान में 24 हजार करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया
- 9 जुलाई रेल मंत्रालय ने वन्दे भारत सहित सभी रेलगाड़ियों में ए.सी. कुर्सी यान और विशेष श्रेणी के किराये में 25 प्रतिशत की कटौती की घोषणा की
- 10 जुलाई पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के लिए 697 मतदान केंद्रों पर पुर्नमतदान व्यापक हिंसा के बाद रद्द
- 11 जुलाई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय 'प्रांत प्रचारक बैठक' इस वर्ष दिनांक 13, 14 एवं 15 जुलाई 2023 को कोयम्बटूर के निकट ऊटी (ज़िला नीलगिरी), तमिलनाडु में आयोजित हो रही है
- 12 जुलाई सरकार ने नकली दावा बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए विशेष दल बनाये। केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा कि देश में दवाइयों की गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा
- 13 जुलाई उत्तराखंड के 30 साल के युवा चंदन नयाल, प्रकृति को अपने हाथों से संवार रहे हैं, 10 साल में 60 हजार पेड़ लगाएं, चंदन नें अपना शरीर भी दान किया
- 14 जुलाई दोपहर भारत के मिशन चंद्रयान -3 का सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक प्रक्षेपण
- 15 जुलाई 7,300 अमरनाथ यात्रियों का 13वां जत्थाा आज कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जम्मू आधार शिविर से कश्मीर के बालतल और पहलगाम आधार शिविरों के लिए रवाना हुआ। 1 जुलाई को अमरनाथ यात्रा शुरू होने के बाद से अब तक 1 लाख 87 हजार 114 श्रद्धालु पवित्र गुफा के दर्शन कर चुके हैं।
- 16 जुलाई यूपी एटीएस ने गोंडा से पाकिस्तानी जासूस को गिरफ्तार किया, मोहम्मद रईस सेना के खिलाफ कर रहा था जासूसी
- 17 जुलाई भारत और उसके सहयोगी देशों ने कृषि जल संसाधन प्रबंधन में आदान प्रदान का विस्तार करने के लिए मेकांग गंगा सहयोग व्यापार परिषद गठित करने का निर्णय लिया
- 18 जुलाई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पोर्ट ब्लेयर के वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के नए एकीकृत टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया
- 19 जुलाई स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोविड टीकाकरण की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए कोविड दिशानिर्देशों को और आसान बना दिया है। नए दिशानिर्देशों के तहत भारत में आने वाले अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों के आरटी-पीसीआर परीक्षण को हटा दिया गया है।
- 20 जुलाई भारत ने नई दिल्ली में पारंपरिक औषधियों पर आसियान देशों के सम्मेलन की मेजबानी की।

संकलनकर्ता - पल्लवी सिंह

हरियाली तीज

छाया त्यागी
शिक्षिका

अम्मा मेरी रंग भरा जी
ए जी कोई आई है हरियाली तीज,
घर-घर झूला झूले कामिनी जी
बन बन मोर पपीहा बोलता जी।

भारत के गांव में आज भी सावन की फुहार जैसे ही आंगन में कदम रखती है, ऐसे ऐसे गीत गूंजने लगते हैं। घर की बहू बेटियां घर के काम करते-करते गुनगुनाने लगती हैं, तो झुरियों पड़े चेहरों पर भी बरबस मुस्कुराहट आने लगती है।

घर की छोटी-छोटी बेटियां अपनी दादी से मनुहार करती हैं, अम्मा जी बाबा से कह दो झूला डलवा देंगे आम के पेड़ पर। हमें झूला झूलना है, और अम्मा जी को भी अपना बीते सावन फिर से याद आ जाते हैं।

भारत व्रत, पूजन उत्सव व त्यौहारों का देश है शायद ही वर्ष का कोई महीना ऐसा हो जिसमें कोई त्यौहार ना आता हो। भारत में हर मौके के त्योहार हैं। विशेषकर हिंदुओं में सबसे अधिक त्योहार मनाए जाते हैं, कारण है ऋषि मुनियों ने जीवन को सरस और सुंदर बनाने की यह योजनाएं बना रखी हैं।

प्रत्येक पर्व, त्यौहार, व्रत उत्सव, मेले सभी का एक गुप्त महत्व है। प्रत्येक के साथ भारतीय संस्कृति जुड़ी हुई है। प्रत्येक के साथ विशेष विचार और उद्देश्य है। यही भारतीय त्योहारों की विशेष बात है और प्रकृति के साथ साहचर्य होना इसकी विशेषता को दुगना कर देता है। प्रत्येक ऋतु परिवर्तन अपने साथ विशेष त्यौहार, विशेष निर्देश लेकर के आती है। इन्हीं अवसरों पर त्योहारों का समावेश भी किया हुआ है, जो वास्तव में बहत ही उचित है। भारत के सभी उत्सव सामूहिक रूप से सभी के साथ मिलकर आनंद मानने और एकता के सूत्र में बांधने का गुप्त रहस्य संजोए हुए हैं।

इसी प्रकार हरियाली तीज भारत का प्रेम और आस्था का त्यौहार है। यह त्यौहार श्रावण मास में शुक्ल पक्ष में तृतीया को मनाया जाता है।

हरियाली तीज का आगमन भीषण गर्मी की ऋतु के बाद पुनर्जीवन व पुनर्शक्ति के रूप में होता है। यदि इस दिन वर्षा हो तो यह और भी स्मरणीय हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु के समाप्त होने पर काले कजरारे, मेघों को आकाश में घूमते देखना, पावस के प्रारंभ में पपीहे की पुकार, वर्षा की फुहार से मन आनंदित होता है और इसी समय में मनाया जाता है तीज का पर्व उत्सव।

यह त्योहार भारत के उत्तरी भाग में मुख्य रूप से बड़े ही हर्ष उल्लास से मनाया जाता है। इसे श्रावणी तीज, हरियाली तीज और कजली तीज भी कहा जाता है। बुंदेलखंड के जालौन महोबा, ओरछा में इसे हरियाली तीज कहते हैं और राजस्थान और हरियाणा में भी इसे हरियाली तीज के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा पूर्वी उत्तर प्रदेश में बनारस, मिर्जापर, देवली, गोरखपुर जौनपुर, सुल्तानपुर जिलों में इसे कजली तीज के रूप में मनाया जाता है।लोक गायन की प्रसिद्ध शैली भी इस नाम से प्रसिद्ध हैं जिसे कजली कहते हैं।

तीज का त्यौहार नृत्य, संगीत, उल्लास भरा पर्व है और यह पर्व है पुरुष और प्रकृति के मिलन का। यह त्यौहार जितना महत्वपूर्ण विवाहित महिलाओं के लिए हैं उतना ही कुंवारी कंन्याओं के लिए भी प्यारा त्यौहार है, जहां एक तरफ विवाहिता अपने प्रियतम के स्वस्थ जीवन व लंबी आयु तथा सफलता के लिए तथा अपने अखंड सोभाग्य के लिए भगवान शिव और माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं, वहीं कुंवारी बेटियां एक तरफ अपने भाई के दुलार और लगाव का उत्सव मनाती हैं तथा अपने भविष्य में सदगुणी वर को प्राप्त करने के लिए भगवान शिव की अर्धांगिनी माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है की सबसे पहले गिरिराज हिमालय की पुत्री पार्वती ने इस व्रत को भगवान शिव को प्रसन्न कर उन्हें पति के रूप में स्वीकार करने के लिए किया था और माता पार्वती की प्रार्थना पर भगवान शिव ने यह आशीर्वाद दिया था, कि जो भी कन्या इस व्रत

को विधि विधान व निष्ठा पूर्वक करेंगी उन्हें उत्तम वैवाहिक सुख प्राप्त होगा।

हमारे ग्रंथो में सोलह सिंगार का वर्णन है जिसके अंदर उबटन स्नान, वस्त्र धारण बिंदी, सिंदूर, काजल, मेहंदी चूड़िया, मंगलसूत्र, गजरा मांग टीका, झुमका, बाजूबंद, कमरबंद, बिछिया, पायल, अंगूठी शामिल होते हैं, और ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि यह सिर्फ महिलाओं के साज सजावट का सामान है बल्कि प्रत्येक श्रृंगार का अपना वैज्ञानिक आधार है। इस त्यौहार पर महिलाएं 6 श्रृंगार कर पूरा दिन निर्जला व्रत रखती हैं और दूसरे दिन सुबह स्नान पूजा और व्रत पारायण करके भोजन ग्रहण करती हैं। स्त्रियां हरे रंग की लहररिया साड़ी, चुनरी पहनती है तथा झूला झूलती हैं और ऐसा लगता है मानो सुहागिन आकाश को छूने चली हैं। कुछ स्थानों पर इस दिन मायके से साड़ी, सिंगार, मिठाइयां सिंधारे के रूप में दिया जाता हैं। विवाहिता स्त्रियां अपनी सास के पांव छूकर उनसे आशीर्वाद लेती हैं। यह प्रेम, मिलन, विश्वास व आस्था और मंगल कामना का सुंदर समृद्ध मदमस्त, नृत्य, संगीत, उल्लास का पर्व है। यह उत्सव प्रतीक है पुरुष और प्रकृति के मिलन का।

जैसा कि हम जानते हैं भारतीय त्योहारों का अपना समृद्धशाली और वैज्ञानिक महत्व है। त्योहारों का आनंद और भी अधिक हो जाता है जब उन्हें पूरी शुद्धता पवित्रता व मूल भावना साथ मनाया जाए क्योंकि हमारे त्यौहार भारतीय संस्कृति के गौरव की पहचान है।

हम जानते हैं परिवर्तन प्रकृति का नियम है, लेकिन हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि आज भारतीय पारंपरिक पर्वों व उत्सवों का मनाने का ढंग बदलता जा रहा है, परंतु यह परिवर्तन हमें किस ओर ले जाएगा? हमें यह ध्यान रखना होगा, कहीं यह हमें दिशा भ्रमित ना कर दे, कहीं हम दिखावे के चक्कर में अपने पर्वों की सकारात्मक को ना खो दें।

हमारा परिवर्तन हमेशा सुंदर, सभ्य सुसंस्कृत व सकारात्मक होना चाहिए, जो हमारी संस्कृति की रक्षा कर सके। अगर हम अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर पाए तो हम अपना स्वयं का अस्तित्व ही खो देंगे। सचमुच भारतीय संस्कृति एक महान जीवन धारा है, जो अविरल प्रवाहित होती है। हमारी संस्कृति अद्वितीय है इसकी परंपराएं अदभुत हैं अतः इसके संरक्षण की जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी के हाथ में है। हमें उदारता व समन्वयवयवादी गुणों को रखते हुए अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखना है। आज पूरा विश्व भारत की समृद्धिशाली संस्कृति का लोहा मान रहा है, अतः परिवर्तन के इस दौर में यह हमारा दायित्व बनता है, कि हम अपनी संस्कृति के गहन अर्थ को खुद समझें और समझाएं और इसे सुदृढ़ करने का प्रयास करें जिससे हमारे व्रत पर्व उत्सव दूसरों के लिए आदर्श रूप में स्थापित हो सके। ■

1. **भारत के बाहर पहले आईआईटी परिसर की स्थापना किस देश में की जाएगी?**

(A) केन्या (C) मिस्त्र
(B) दक्षिण अफ्रीका (D) तंजानिया

2. **इसरो के सतीश धवन सेंटर से चंद्रयान-3 प्रक्षेपण कब हुआ ?**

(A) 18 जुलाई (C) 12 जुलाई
(B) 15 जुलाई (D) 14 जुलाई

3. **'भगवान हनुमान' को किस चैंपियनशिप का आधिकारिक शुभंकर घोषित किया गया है?**

(A) एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप (C) डेविस कप
(B) क्रिकेट एशिया कप (D) वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप

4. **पीएम मोदी को किस देश के सर्वोच्च सम्मान 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया?**

(A) जर्मनी (C) ऑस्ट्रेलिया
(B) फ्रांस (D) ब्राजील

5. **भारत में 'Women 20 Summit' का मेजबान कौन सा राज्य है ?**

(A) दिल्ली (C) हिमाचल प्रदेश
(B) पंजाब (D) तमिलनाडु

6. **किस राज्य में 'वन-टैप-वन-ट्री' अभियान की शुरूआत की गयी है?**

(A) उत्तर प्रदेश (C) हिमाचल प्रदेश
(B) मध्य प्रदेश (D) अरुणाचल प्रदेश

7. **उत्तर भारत के पहले 'स्किन बैंक' का उद्घाटन कहाँ हुआ है? स्किन बैंक में डोनेट किए हुए त्वचा का इस्तेमाल जले हुए मरीजों के उपचार में किया जाता है।**

(A) मोहाली (C) नई दिल्ली
(B) देहरादून (D) शिमला

8. **गीता के उपदेश महाभारत के किस पर्व में दिए गए हैं ?**

(A) भीष्म पर्व (C) वन पर्व
(B) उत्तर-पर्व (D) सभा पर्व

9. **महाभारत के किस पर्व में रामायण का उल्लेख आता है ?**

(A) भीष्म पर्व (C) वन पर्व
(B) उत्तर-पर्व (D) सभा पर्व

10. **निम्नलिखित पुरस्कारों में से कौन सा साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए दिया जाता है?**

(A) ज्ञानपीठ पुरस्कार (C) धन्वंतरी पुरस्कार
(B) दादा साहेब फाल्के पुरस्कार (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर :
1. (D), 2. (D), 3. (A), 4. (B), 5. (D), 6. (A), 7. (C), 8. (A), 9. (C), 10. (A)

हर दिन पावन

दिनांक	नाम
1 अगस्त, 1982 जन्मतिथि	पुरुषोत्तम दास टंडन (स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, भारत रत्न, हिन्दी के अनन्य सेवक)
1 अगस्त, 1920 पुण्यतिथि	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (राष्ट्रवादी शिक्षक, समाज सुधारक, वकील, स्वतंत्रता सेनानी)
2 अगस्त, 1861 जन्मतिथि	डा. प्रफुल्ल चन्द राय (रसायनज्ञ, शिक्षक)
3 अगस्त, 1886 जन्मतिथि	मैथलीशरण गुप्त (राष्ट्रकवि, साकेत, यशोधरा, हिडिम्बा काव्यकृतियां)
5 अगस्त, 1915 जन्मतिथि	डा. शिवमंगल सिंह सुमन, कवि(उ.प्र. हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष रहे।)
7 अगस्त 1904, जन्मतिथि	वासुदेव शरण अग्रवाल (पुरातत्ववेता, राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय का दायित्व संभाला)
9 अगस्त,1914 जन्मतिथि	चन्द्रशेखर परमानंद भिषीकर (बाबूराव) (हेडगेवार जी की पहली जीवनी इन्होंने लिखी।)
10 अगस्त, 1977 पुण्यतिथि	श्यामलाल गुप्त (पार्षद) (विजयी विश्व तिरंगा प्यारा (झंडा गीत) के लेखक)
11 अगस्त, 1908 पुण्यतिथि	खुदीराम बोस (स्वतंत्रता हेतु फांसी पर चढ़ गये)
12 अगस्त, 1817 जन्मतिथि	ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव (1857-58 के विद्रोह के समय अंग्रेजों द्वारा फांसी दे दी गयी)
13 अगस्त, 1936 पुण्यतिथि	मैडम भाकाजी कामा (भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराया)
14 अगस्त 1817 जन्मतिथि	ठाकुर केसरी सिंह बारहट (क्रान्तिकारी, राजस्थान केसरी के नाम से विख्यात थे)
15 अगस्त, 1872 जन्मतिथि	महर्षि अरविन्द घोष (पांडिचेरी आश्रम के संस्थापक, कवि, वेद उपनिषदों पर टीका लिखी)
16 अगस्त, 1831 जन्मतिथि	अवन्तीबाई लोधी (राजपूत रानी शासक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)
17 अगस्त 1909 पुण्यतिथि	मदनलाल धींगरा (क्रान्तिकारी)
18 अगस्त, 1919 जन्मतिथि	राजपाल पुरी (संघ कार्य के प्रणेता, 1945 में सिन्ध के प्रान्त प्रचारक बने)
20 अगस्त,1924 जन्मतिथि	के. सूर्यनारायण राव (तमिलनाडु के प्रांत प्रचारक रहे, मैसूर प्रवास के दौरान गुरूजी इनके घर पर रुकते थे)
21 अगस्त, 1965 पुण्यतिथि	भाई हिरदा राम जी (आजीवन कारावास, कालेपानी की सजा)
22 अगस्त, 1933 जन्मतिथि	डा. जगमोहन गर्ग, (उच्चताप सहने योग्य विशेष तार निर्माणकर्ता)
23 अगस्त, 2008 पुण्यतिथि	स्वामी लक्ष्मणानन्द (हिन्दू जागरण के अग्रदूत (उड़ीसा))
25 अगस्त, 1944 पुण्यतिथि	मेजर दुर्गा मल्ल (आजाद हिन्द फौज के प्रथम गोरखा सैनिक)
28 अगस्त, 1903 जन्मतिथि	बाबा साहेब आप्टे (संघ के प्रथम प्रचारक, डा. साहब ने उन्हें बाबा साहब नाम दिया था)
29 अगस्त, 1905 जन्मतिथि	मेजर ध्यान चन्द (हॉकी का जादूगर कहा गया)
31 अगस्त, 1927 जन्मतिथि	उषाताई चाटी (प्रचारिका) (राष्ट्र सेविका समति की तीसरी प्रमुख संचालिका)

पत्रकारिता जगत में हलचल

स्वप्निल सारस्वत - मीडिया ग्रुप इंडिया टुडे के हिन्दी चैनल आज तक से विराम देकर स्वप्निल सारस्वत ने नया रास्ता खोज लिया है। प्रिंट और टीवी मीडिया के लंबे अनुभव के बाद वरिष्ठ पत्रकार स्वप्निल सारस्वत ने अब डिजिटल मीडिया के साथ अपनी नई पारी का आगाज किया है। स्वप्निल सारस्वत देश के प्रमुख मीडिया नेटवर्क्स में शुमार 'टीवी9 नेटवर्क' की डिजिटल टीम का हिस्सा बनी हैं। स्वप्निल ने 'टीवी9 भारतवर्ष' (डिजिटल) में सीनियर असिस्टेंट एडिटर के पद पर जॉइन किया है।

अमित मिश्रा - वरिष्ठ पत्रकार अमित मिश्रा ने हिंदी न्यूज चैनल 'भारत24' को अलविदा बोल दिया है। वह पिछले साल अगस्त में हुई चैनल की लॉन्चिंग के समय से ही बतौर कंसल्टिंग एडिटर इसके साथ जुड़े हुए थे। यहां रात नौ बजे के शो 'न्यूज इनसाइट' की जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर थी। दोपहर एक बजे के शो 'जवाब तो देना पड़ेगा' के भी वह को-होस्ट थे।

सिद्धिनाथ विश्वकर्मा - वरिष्ठ टीवी पत्रकार सिद्धिनाथ विश्वकर्मा ने जाने-माने पत्रकार और 'ईटीवी न्यूज नेटवर्क' व 'जी मीडिया' के रीजनल क्लस्टर के पूर्व सीईओ जगदीश चंद्रा के नेतृत्व में पिछले साल लॉन्च हुए हिंदी न्यूज चैनल 'भारत24' के साथ अपना नया सफर शुरू किया है। सिद्धिनाथ विश्वकर्मा ने बताया कि उन्होंने इस चैनल में बतौर मैनेजिंग एडिटर जॉइन किया है।

सारा जैकब - 'एनडीटीवी' की पूर्व एंकर और सीनियर एडिटर सारा जैकब ने 'फ्रांस 24' के साथ मीडिया में अपने नए सफर की शुरूआत की है। सारा जैकब 20 साल से ज्यादा समय से 'एनडीटीवी' के साथ जुड़ी हुई थीं और इस साल मई में उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। सारा जैकब ने वर्ष 2003 में 'एनडीटीवी' में अपनी पारी बतौर रिपोर्टर शुरू की थी।

तुषार कौशिक - मीडिया जगत में अपना 13 साल से ज्यादा समय टीवी पत्रकारिता को दे चुके तुषार कौशिक ने हाल ही में न्यूज नेशन टीवी नेटवर्क के साथ अपनी नई पारी की शुरूआत की है। 'न्यूज नेशन' में तुषार कौशिक सीनियर एंकर बनाए गए हैं। तुषार इससे पहले 2 साल से ज्यादा समय तक iTV नेटवर्क के इंडिया न्यूज चैनल में सीनियर एंकर थे।

जीतेंद्र दीक्षित- बीते 21 साल से जुड़े रहने के बाद एबीपी न्यूज के पश्चिम भारत संपादक जीतेंद्र दीक्षित ने चैनल से इस्तीफा दे दिया है। जीतेंद्र मुंबई ब्यूरो के प्रभारी थे और महाराष्ट्र गुजरात और गोवा राज्यों से समाचार संपादन की उनकी जिम्मेदारी थी। इस्तीफे के बाद जीतेंद्र का कहना है कि ये स्क्रीन से उनका अस्थाई ब्रेक है और इस ब्रेक का उपयोग वे लेखन और भ्रमण के लिए करेंगे।

अजीत सिंह राठी - एबीपी गंगा के साथ चार साल तीन महीने की लंबी पारी को अजीत सिंह राठी ने विराम दे दिया है। अब वे न्यूज नेशन से जुड़ गए हैं। उन्हें न्यूज स्टेट / न्यूज नेशन के लिए उत्तराखंड का एडिटर बनाया गया है। अजीत सिंह राठी ने सोशल मीडिया के जरिए अपने जानकारों को नई पारी के बारे में जानकारी दी है।

कुमार अतुल - अलीगढ़ अमर उजाला में 20 जून 2022 को समाचार संपादक के रूप में आए कुमार अतुल को एक साल के कार्यकाल के बाद मैनेजमेंट ने पदोन्नति देकर स्थानीय संपादक बना दिया है। कुमार अतुल यह नई जिम्मेदारी अलीगढ़ अमर उजाला में ही संभालेंगे।

पारितोष चतुर्वेदी - टीवी मीडिया से बड़ी खबर आ रही है। टीवी9 भारतवर्ष के डिप्टी मैनेजिंग एडिटर को नेटवर्क ने बड़ा तोहफा दिया है। पारितोष चतुर्वेदी प्रमोट हो गए हैं। उन्हें टीवी9 भारतवर्ष का नया मैनेजिंग एडिटर बनाया गया है। आपको बता दें इसके पहले पारितोष चतुर्वेदी टाइम्स नाउ नवभारत में बतौर आउटपुट हेड अपनी जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

पिंकी धनकड़- टीवी पत्रकार पिंकी धनखड़ ने हिंदी न्यूज चैनल सहारा समय में अपनी पारी को विराम दे दिया है। वह यहां करीब 4 साल से एंकर कम प्रड्यूसर के तौर पर अपनी जिम्मेदारी संभाल रही थीं। पिंकी धनखड़ ने सहारा समय प्रबंधन को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। पिंकी धनखड़ अपनी नई पारी की शुरूआत जी दिल्ली एनसीआर हरियाणा के साथ कर रही हैं।

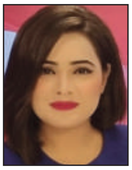

निखिल मीरचंदानी - 'विशाल भारद्वाज फिल्म्स' ने निखिल मीरचंदानी को चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर (CEO) के पद पर नियुक्त किया है। अपनी इस भूमिका में वह फिल्मों और वेब सीरीज के लिए कंटेंट डेवलप करने के तहत क्रिएटर्स, राइटर्स और डायरेक्टर्स के साथ सहयोग का नेतृत्व करेंगे। वह 'नेशनल जियोग्राफिक चैनल' में मैनेजिंग डायरेक्टर और 'स्टार इंडिया' में एग्जिक्यूटिव वाइस प्रेजिडेंट व जनरल मैनेजर रह चुके हैं।

मीनाक्षी शर्मा - 'जी मीडिया कॉरपोरेशन लिमिटेड' ने मीनाक्षी शर्मा को एडिटर (ब्रैंडेड कंटेंट और स्पेशल प्रोजेक्ट्स) के पद पर नियुक्त किया है। अपनी इस भूमिका में वह 'ZMCL' के ब्रैंडेड कंटेंट और सॉल्यूशंस के लिए क्रिएटिव व एडिटोरियल स्ट्रैटेजी का नेतृत्व करेंगी। इसके अलावा वह इवेंट मैनेजमेंट, IP's और स्पेशल प्रोजेक्ट्स के लिए भी जिम्मेदार होंगी।

मोहित कुमार है (प्रोड्यूसर, न्यूज 24)

प्रेरणा विचार

प्रिय पाठकगण आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका द्वारा 25 अक्टूबर 2023 से 5 नवम्बर 2023 के बीच पाठकों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। जिसमें जुलाई 2023 से अक्टूबर 2023 (4 माह) की पत्रिकाओं में से प्रश्न पूछे जाएंगे। आपके पास जुलाई 2023 से प्रेरणा विचार पत्रिका का प्रत्येक अंक पहुंचेगा। जिसे आपको ध्यान से पढ़ना होगा तथा उन्हीं अंकों में से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर देना होगा। परीक्षा ऑनलाइन आयोजित की जाएगी।

ऑनलाइन परीक्षा दो वर्गों में आयोजित की जायेंगी।

- ♦ वर्ग 1- विद्यार्थी
- ♦ वर्ग-2- सामान्य

- ☞ सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पत्र (ई-प्रमाण पत्र) मिलेगा।
- ☞ दोनों वर्गों के प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह दिया जाएगा।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133754) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

RNI Number : UPHIN/2023/84344
Postal Reg. No. : DL(DS)-61/MP/2023-24-25

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के
कला एवं मीडिया
विद्यार्थियों के लिए

विषय :

- आजादी का अमृत महोत्सव
- भारतीय लोकतंत्र
- जनजातीय समाज
- उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड की संस्कृति
- पर्यावरण
- ग्राम विकास
- स्वाधीनता आन्दोलन
- भविष्य का भारत
- सामाजिक सद्भाव
- धर्म एवं अध्यात्म
- महिला सशक्तीकरण

वर्ग : वृत्तचित्र - कथा फ़िल्में - डॉक्यु ड्रामा
अधिकतम समय : 20 मिनट

1,2 एवं 3 दिसम्बर 2023
स्थान : गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

नगद पुरस्कार मूल्य
₹ 200000/-

SCAN TO REGISTER

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://prernasamvad.in/registerforfilms | Prerna Media | Prernasmedia | @PrernaMedia

नोट - प्रविष्टियों को 05 जून से 05 अक्टूबर 2023 तक भेज सकते हैं।

www.prernasamvad.in 9891360088
email : prernachitrabharti2023@gmail.com

संपर्क सूत्र : अरुण अरोड़ा - +9811338858 | डॉ. यशार्थ मंजुल - +91 9621560373 | डॉ. राजीव रंजन - +91 9871650421 | कार्यालय - +91 9354133754